डाक पंजीयन नं. 99/2021–23

E-mail:-aadhuniksamachar2014@gmail.com website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

PG,5

PG,8

सिनेमाः मृणाल ठाकुर ने शेयर कीं अब तक की सबसे बोल्ड तस्वीरें

वर्ष -07 अंक -341 प्रयागराज, बुधवार 16 फरवरी, 2022 पृष्ठ- 8 मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

तेलंगाना में बारिश से उखड़े 70 साल पुराने विशाल बरगद के पेड़ को मिली फिर से जमीन, प्रकृति प्रेमियों ने किया यह अनूठा काम

सिरसिला। तेलंगाना के सिरसिला जिले में पर्यावरण संरक्षण की एक खूबसूरत मिसाल देखने को मिली। प्रकृति प्रेमियों के सफल प्रयास से एक उखड़े हुए बरगद के पेड़ को फिर से जमीन मिल गई। बता दें कि जिले में मूसलाधार बारिश के कारण एक 70 साल से अधिक पुराना बरगद पेड़, जो 100 टन था। उसे कुछ पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने मिलकर एक नया जीवन दिया है। सिलसिला जिले के सुड्डाला गांव में भीषण बारिश के कारण महीने पहले एक 70 वर्षीय विशाल बरगद का पेड़ उखड़ गया था। लेकिन उसी गांव के एक शख्स डा डोब्बाला प्रकाश, जो एक प्रकृति प्रेमी है। साथ ही वह वृक्ष रक्षा के सिद्धांत में विश्वास करते हैं। वह इस विशाल बरगद के पेड़ के गिरने से बेहद परेशान और विचलित हो उठे थे। वह यह सोच कर चिंतित थे कि जिस ने मनुष्यों और पक्षियों को समान रुप से आसरा दिया। वह पेड़ बेसहारा जमीन पर पड़ा है। बस फिर क्या था उन्होंने पेड़ को फिर से लगाने का फैसला कर लिया।

जेईई मेंस, नीट व सीयूसेट परीक्षाओं की जल्द घोषित होंगी तारीखें, छात्रों की मांग पर शिक्षा मंत्रालय ने दिए निर्देश

नई दिल्ली। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) की ओर से 10वीं और 12वीं कक्षाओं के दूसरे टर्म की बोर्ड परीक्षा की तारीख घोषित होने के बाद छात्रों की निगाहें अब जेईई मेंस, नीट और सीयूसेट जैसी परीक्षाओं की तारीखों पर टिकी है। ऐसे में शिक्षा मंत्रालय ने नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) को जल्द ही इन सभी परीक्षाओं की तारीखें घोषित करने के निर्देश दिए हैं। उम्मीद की जा रही है, इस महीने तक इन सभी परीक्षाओं की तारीखें घोषित कर दी जाएंगी। एनटीए से जुड़े वरिष्ठ अधिकारियों के अनुसार इसे लेकर तैयारियां शुरू हो गई हैं। बोर्ड परीक्षा की तारीखें घोषित होने के बाद वैसे भी अब कोई दुविधा नहीं है। ऐसे में अब जल्द ही तारीखें घोषित कर दी जाएंगी। हालांकि अभी सभी परीक्षाओं का रजिस्ट्रेशन नहीं शुरू होगा।

टीकाकरण का आंकड़ा 173.42 करोड़ के पार, 24 घंटे में दी गई इतनी खुराक

नई दिल्ली। देश में कोरोना के खिलाफ टीकाकरण का काम तेजी से साथ किया जा रहा है। टीकाकरण को लेकर देश में नए-नए रिकार्ड स्थापित हो रहे हैं। भारत में अब तक टीकाकरण का आंकड़ा 173.42 करोड़ को पार कर गया है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने इसकी जानकारी दी है। मंत्रालय के मुताबिक, बीते 24 घंटे में 44.68 लाख से ज्यादा खुराक दी जा चुकी है। मंत्रालय ने एक प्रेस रिलीज में बताया कि 24 घंटे में वैक्सीन की 44,68,365 खुराक दी गई हैं। इसके साथ ही देश में मंगलवार सुबह सात बजे तक 173.42 करोड़ से ज्यादा खुराक दी जा चुकी है। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, कोविड 19 वैक्सीन की कुल 39,15,704 प्रीकाशन डोज स्वास्थ्यकर्मियों को फ्रंटलाइन वर्कर्स को 54,69,127 और 82,58,894 खुराक 60 साल से अधिक उम्र के लोगों को दी गई है। इसके अलावा 15 से 18 उम्र के 5,24,34,558 किशोरों को वैक्सीन की पहली खुराक जबकि 1,64,08,841 को

दूसरी खुराक दी गई है। उधर, मंगलवार को देश में कोरोना के 27,409 नए मामले सामने आए हैं। इस दौरान 347 लोगों की मौत भी हुई है। साथ ही 82,817 लोग कोरोना से रिकवर भी हुए हैं। देश में अब एक्टिव केस घटकर 4,23,127 हो गए है। वहीं, कोरोना से अब तक 4,26,92,943 लोग संक्रमित हो चुके हैं। वहीं, कुल 4,17,60,458 लोग ठीक हो चुके हैं। इसके अलावा 5,09,358 मरीजों की मौत भी हो चुकी है।

50 रुपये की रिश्वत लेने पर 24 साल से पहले किया गया था सेवानिवृत्त, अब कर्नाटक hC से मिली कर्मचारी को बड़ी राहत

बेंगलुरू। कर्नाटक हाईकोर्ट ने एक सरकारी कर्मचारी को 50 रुपये रिश्वत लेने पर अनिवार्य सेवानिवृत्ति की सजा देने वाले अनुशासनात्मक प्राधिकारी के आदेश को रद्द कर दिया है। जानकारी के अनुसार, एक सरकारी कर्मचारी को 50 रुपये रिश्वत लेने पर सेवानिवृत्ति की सजा दी गई थी। न्यायमूर्ति डी.जी. पंडित और न्यायमूर्ति अनंत रामनाथ हेगड़े ने सोमवार को यह आदेश दिया। पीठ ने टिप्पणी करते हुए कहा कि कर्मचारी पर लगाया गया दंड अपराध की प्रकृति और गंभीरता के लिए चौकाने वाला था। दरअसल, याचिकाकर्ता एम.एस. कडाकोल ने 2004 में जारी आदेश को चुनौती दी थी। पीठ ने मामले को अनुशासनात्मक समिति को वापस भेज दिया है, और दो महीने की अवधि के भीतर सजा का उचित आदेश पारित करने के लिए कहा है। याचिकाकर्ता पर आरोप है कि

उसने धारावाड़ से ब्यादगी स्थानांतरित किए गए एक सरकारी कर्मचारी चंद्रचारी के सेवा रिकार्ड को भेजने के लिए 150 रुपये की रिश्वत मांगी थी। हालांकि, बाद में उसे 50 रुपये की रिश्वत लेते हुए लोकायुक्त के अधिकारियों ने पकड़ लिया था। याचिकाकर्ता पैसे को मोजे में छिपा रहा था। लोकायुक्त पुलिस ने उसके खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 7, 13 (1), 13 (2) के तहत शिकायत दर्ज की थी। लेकिन, बाद में विभागीय जांच की गई और 7 सितंबर 2004 को अनुशासनात्मक प्राधिकारी ने उन्हें अनिवार्य सेवानिवृत्ति की सजा दी। कर्नाटक प्रशासनिक न्यायाधिकरण (केएटी) ने भी सजा आदेश पर सवाल उठाने वाली याचिका को खारिज कर दिया। इसके बाद याचिकाकर्ता कडाकोल ने इस संबंध में उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था

भारत ने जारी की एडवाइजरी, नागरिकों को यूक्रेन से वापस लौटने की सलाह

नई दिल्ली। रूस और यूक्रेन के बीच तनाव और बढ़ गया है। दोनों देशों के बीच बढ़ते तनाव के चलते कई देश कीव से अपने-अपने नागरिकों को स्वदेश लौटने की सलाह दे चुके हैं। वहीं, अब भारत ने भी कीव में रह रहे अपने नागरिकों के लिए एडवाइजरी जारी की है। भारतीय दूतावास की ओर से जारी एडवाइजरी में कहा गया है कि यूक्रेन की मौजूदा स्थिति को देखते हुए भारतीयों से अपील है कि वे वहां से अस्थायी रूप से स्वदेश लौटें। भारतीय दूतावास ने कहा कि कीव में रह रहे भारतीय और खासकर छात्रों से अपील है कि अगर उनका वहां रहना बहुत जरूरी नहीं है तो वे वहां से वापस लौट सकते हैं। इसके अलावा भारतीय नागरिकों से यूक्रेन की बेवजह यात्रा ना करने की अपील भी की गई है। भारतीय दूतावास ने ये भी कहा कि देश के नागरिक वहां स्थित दूतावास को अपनी स्थिति के बारे में जानकारी देते रहें।

रायल सऊदी सशस्त्र बलों के कमांडर को आज नई दिल्ली में दिया गया गार्ड आफ आनर

नई दिल्ली, एएनआइ। रायल सऊदी सशस्त्र बलों के कमांडर को आज नई दिल्ली गार्ड आफ आनर

दिया गया। बता दें कि रायल सऊदी लैंड फोर्सेज के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल फहद बिन अब्दुल्ला मोहम्मद अल-मुतायर ने नई दिल्ली आए हुए है, जहां उन्हें भव्य साउथ ब्लाक लान में गार्ड आफ आनर दिया गया। अतिरिक्त लोक सूचना महानिदेशालय ने ट्विटर पर यह जानकारी साझा करते हुए कहा, 'लेफ्टिनेंट जनरल फहद बिन अब्दुल्ला मोहम्मद अल-मुतायर , कमांडर , रायल सऊदी लैंड फोर्सेज, किंगडम आफ सऊदी अरब को साउथ ब्लाक, नई दिल्ली में गार्ड आफ आनर मिला।' आपको बता दें कि गार्ड आफ आनर एक बड़ा सम्मान है, जिसमें गणमान्य और राज्यों के प्रमुख के सम्मान के निशान के रुप में प्रस्तुत किया जाता है। आपको बता दें इससे पहले, 9 फरवरी को, थल सेनाध्यक्ष जनरल एमएम नरवने ने लेफ्टिनेंट जनरल फहद बिन अब्दुल्ला मोहम्मद अल-मुतायर के साथ टेलीफोन पर बातचीत की हुई थी, जिसमें द्विपक्षीय सैन्य संबंधों को मजबूती देने के पहलुओं पर जोर दिया गया था। इस बातचीत के बारे में बताते हुए, सेना की ओर से ट्वीट कर कहा गया, 'जनरल एमएम नरवणे ने लेफ्टिनेंट जनरल फहद बिन अब्दुल्ला मोहम्मद अल-मुतायर के साथ टेलीफोन पर बातचीत की और द्विपक्षीय रक्षा सहयोग के पहलुओं पर चर्चा की।'

हिजाब विवाद के बीच कर्नाटक में 10वीं तक के खुले गए स्कूल दूसरे दिन भी उमड़ी छात्रों की भीड़

उडुपी । कर्नाटक के हिजाब विवाद के बीच राज्य के सभी दसवीं तक के स्कूलों को खोल दिया गया है। कर्नाटक के कालेजों में हिजाब पर प्रतिबंध लगाने के बाद खूब विरोध हुआ, जिस पर अभी भी

विरोध प्रदर्शन जारी है। यह विवाद इतना बिगड़ गया कि देशभर में अलग-अलग जगहों पर हिजाब मामले को लेकर गर्माहट बढ़ गई। इन सबके बीच, कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने सोमवार को राज्य के सभी 10वीं तक के स्कूल खोलने की घोषणा कर दी है, जिसके बाद आज दूसरे दिन भी सभी छात्र स्कूल जाते हुए नजर आए। पिछले महीने कर्नाटक के उडुपी में सरकारी प्री-यूनिवर्सिटी वीमेंस कालेज में हिजाब के खिलाफ विरोध प्रदर्शन शुरू हुआ था जिसको लेकर बड़ा बवाल मच गया। आज पूरे देश में जगह-जगह पर विरोध प्रदर्शन और राजनीतिक बयानबाजी हो रही है। हिसाब विवाद मामला कर्नाटक हाईकोर्ट में है। जिस पर बीते सोमवार को सुनवाई हुई थी, जो आज फिर से जारी होगी। इन सबके बीच पढ़ाई को प्राथमिकता देते हुए, राज्य सरकार ने स्कूलों को खोलने का आदेश दे दिया है, जिसके तहत कक्षा 1 से लेकर 10 तक के स्कूल 14 फरवरी से खोल दिए गए हैं। स्कूल खुलने के बाद, आज दूसरा दिन है। राज्य भर में छात्रों की भीड़ आज भी अपने-अपने स्कूल जाते हुए दिखाई दी। उडुपी में सरकारी हाई स्कूल के छात्र का यह दृश्य आया सामने आया है आपको बता दें कि रविवार को हुबली में प्रेस कान्फ्रेंस में सीएम बसवराज बोम्मई ने 10वीं तक के स्कूल खुलने की बात कही थी। साथ ही उन्होंने स्कूल खुलने पर स्कूलों में शांति बनाए रखने की अपील की। कल राज्य में स्कूल खोलने का पहला दिन था, जब राज्य के मांड्या जिले में रोटरी स्कूल के बाहर एक बार फिर हिजाब मुद्दा बन गया। जहां विद्यालय के बाहर गेट पर ही एक शिक्षका और छात्रा के अभिभावक के बीच बहस शुरू हो गई। जब छात्रा हिजाब पहने स्कूल में प्रवेश कर रही थी तो, शिक्षिका ने उसे गेट पर ही रोक लिया। शिक्षिका ने छात्रा से हिसाब उतारकर अंदर जाने को कहा, जिस पर उसके अभिभावक में बहस शुरू कर दी। एक अभिभावक का कहना है, 'छात्रों को कक्षा में जाने की अनुमति देने का अनुरोध करने के बाद, हिजाब उतार दिया जा सकता है, लेकिन वे हिजाब के साथ प्रवेश की अनुमति नहीं दे रहे हैं'

वैलेंटाइन डे पर अपना प्यार मनाते हुए, केरल में एक ट्रांस जोड़े ने रचाई एक-दूसरे से शादी

तिरुवनंतपुरम। सच में, अगर प्यार सच्चा हो तो वह अपनी मंजिल तक पहुंच ही जाता है। प्यार की हजारों मिसालें दी जाती हैं, जहां लोग जाति-धर्म से ऊपर उठकर अपने प्यार को चुनते हैं। लेकिन केरल के तिरुवनंतपुरम में प्यार का एक अलग और खूबसूरत चेहरा देखने को मिला, जहां सोमवार को दो ट्रांस प्रेमी जोड़े वैलेंटाइन डे पर अपने प्यार का

जश्न मनाते हुए शादी के बंधन में बंध गए। वहीं श्यामा एस प्रभा और मनु कार्तिक की शादी की खुशियों में उनके परिवारजनों और दोस्तों ने मिलकर चार-चांद लगा दिया। श्यामा एस प्रभा और मनु कार्तिक ने 14 फरवरी, वैलेंटाइन डे के दिन अपने प्यार का जश्न मनाते हुए एक दूसरे से शादी कर ली। बता दें कि त्रिशूर का रहने वाला दूल्हा मनु कार्तिक टेकने पार्क में एक आईटी फर्म में काम करता है और तिरुवनंतपुरम की मूल निवासी श्यामा प्रभा केरल सामाजिक न्याय विभाग के तहत ट्रांसजेंडर सेल में कार्यरत है। दोनों ने एक दूसरे के प्रति प्यार को स्वीकारने के बाद इस ट्रांसजेंडर शादी को अपने परिवारजनों और दोस्तों के संग पूरे रीति-रिवाजों और धूमधाम से मनाया। विवाह स्थल को खूबसूरती से सजाया गया था, जहां फूलों की महक और जगमग करती रोशनी उनके प्यार की खूबसूरती बढ़ा रही थी। शादी में रिश्तेदारों ने भी खूब धूम मचाई नाच गाने के साथ यह विवाह संपन्न हुआ, जिसके बाद नव जोड़े ने सभी बड़ों का आशीर्वाद लिया। आपको बता दें कि रीति रिवाज से हुई शादी के बाद, श्यामा और मनु दोनों ट्रांसजेंडर व्यक्तियों (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 के तहत अपनी शादी को आन पेपर भी कराएंगे, जिसके लिए उन्होंने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के बीच पंजीकृत कराने के लिए उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाने की योजना बनाई है।

दिल्ली पुलिस ने 87 साल की बुजुर्ग महिला से दुष्कर्म के आरोपी को किया गिरफ्तार परिजनों ने पुलिस से की थी शिकायत

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने तिलक नगर इलाके में 87 वर्षीय महिला से कथित रूप से दुष्कर्म करने के आरोप में एक सफाईकर्मी

को गिरफ्तार किया है। दिल्ली पुलिस के मुताबिक, उन्होंने बुजुर्ग महिला के साथ दुष्कर्म करने के आरोप में 30 वर्षीय सफाईकर्मी को गिरफ्तार किया है बता दें कि, तिलक नगर थाना क्षेत्र में एक 87 वर्षीय बुजुर्ग महिला के साथ हुए दुष्कर्म की शिकायक उनके परिजनों ने पुलिस में की थी। इस शिकायत के आधार पर तिलक नगर थाना पुलिस ने मामला दर्ज किया। बताया जा रहा है कि घटना के समय बुजुर्ग घर में अकेली थी। बुजुर्ग के साथ रहने वाली उनकी बेटी घर से बाहर किसी काम से गई हुई थी। पुलिस के अनुसार इस मामले में पहले परिजनों की ओर से घर से चोरी की शिकायत की गई थी। लेकिन इसके बाद पीडिता की बेटी द्वारा पुलिस को दुष्कर्म होने की शिकायत दी गई। जिसके बाद पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए तिलक नगर इलाके में 87 वर्षीय महिला से कथित रूप से दुष्कर्म करने के आरोप में एक सफाईकर्मी को गिरफ्तार कर लिया है।

चुनावी महासंग्राम-पैदल और साइकिल से चलने वाले लोग अब चलने लगे लग्जरी गाडियो-कोरांव मेजा

चुनाव में एक बार फिर जाति-विरादरी के ठेकेदारो के बहूरे

(आधुनिक समाचार सेवा)
संजय द्विवेदी।

कोरांव मेजा (प्रयागराज)। विधानसभा चुनाव 2022 की दुदुभी बजते ही हर जाति- बिरादरी के ठेकेदारों के दिन एक बार फिर बहुर गए है।कई उम्मीदवार और समर्थक प्रत्याशियों के आसपास गणेश परिक्रमा करने में जुटे हुए है। देखा जाए तो वर्तमान समय में इनका क्रेज काफी बढ़ गया है। भले ही इनका गांव और क्षेत्र में कोई जनाधार न हो,बूथ भी जीता पाने की क्षमता न हो मजे की बात तो यह है कि ऐ अपने ही वोट डाल सके। जो कभी खुद कोई चुनाव नहीं जीत सके है। लेकिन अपने गांव व क्षेत्र का ठेका लेने मे ये सबसे आगे है। पैदल साइकिल और बाइक

से सड़कों की खाक छानने वाले कुछ लोग और वर्तमान में लग्जरी गाडियों में फर्राटे भरते देखे जा रहे है।जिसकी आम मतदाताओ में खूब चर्चा हो रहा है।हर चौराहो और नुक्कड़ की चाय नाश्ते की दुकानों पर एक बार फिर से ये लोग चर्चाओ में खास बने हुए है।

किसी विधायको ने नही देखा गरीबों के चूल्हे की हालात-रविन्द्र जैसल

(आधुनिक समाचार सेवा)
संजय द्विवेदी।

कोरांव मेजा (प्रयागराज) प्रदेश में चुनावी बिगुल बजते ही सभी राजनैतिक दलों के लोग अपने अपने प्रत्याशियों के समर्थन में आम जन से मिलकर चुनाव में विजय दिलाने के लिए लगातार संघर्ष कर रहे है और अपनी अपनी पार्टियों के सिद्धांतो को जनता के समक्ष रख रही है। इसी क्रम में दिन सोमवार को चर्चित दलित नेता रविंद्र जैसल प्रधान एवं जिला सचिव समाजवादी पार्टी अनुसूचित सभा के नेतृत्व में सपा के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों ने तहसील मेजा बसहरा सीकी कपूरी समेत विभिन्न गांव का दौरा कर समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी रामदेव निडर कोल के समर्थन में जनसंपर्क कर मतदान करने की अपील किया इस मौके पर दलित नेता रविंद्र जैसल ने अन्य दलों के वर्तमान एवं पूर्व विधायकों पर हमलावर होते हुए कहा कि कोरांव विधानसभा ने कई बार ऐसे लोगों को विधायक बनाया जोकि विधायक बनते ही बड़ी-बड़ी गाडियों और अपना घर और मकान बनाने में दिलचस्पी दिखाई जबकि चुनाव के दौरान समाज और जनता में किए हुए वादों को भूल कर कभी भी उनके घर जाकर उनके समस्याओं और उनके घर के चूल्हे का हाल नहीं जाना जो कि यह अपने आप में बहुत ही निंदनीय विषय है जिसके कारण आगामी होने वाले 27 फरवरी को विधानसभा के चुनाव में जनता ऐसे प्रत्याशियों को मुंह तोड़ जवाब देगी और समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी रामदेव निडर कोल भारी बहुमत से जीताकर उत्तर प्रदेश विधानसभा में पहुंचा। कर एक मिसाल कायम करेगी।मौके पर उपस्थित किसान नेता राजेश पांडे जिला सचिव समाजवादी पार्टी ने कहा कि जैसे ही चुनाव नजदीक आया लोगों को ब्राह्मण समाज के अधिकारों की सुध आने लगी कल तक जब भाजपा सरकार में ब्राह्मण समाज के लोगों का फर्जी एनकाउंटर हुआ करता था तब यह ब्राह्मण हित की बात करने वाले लोग कहां थे ब्राह्मण समाज एक जागरूक समाज है और वह किसी के बहकावे और झांसे में नहीं आने वाला है और ब्राह्मण समाज समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने जा रही है। जनसंपर्क अभियान में मुख्य रूप से राम प्रजापति राष्ट्रीय उपाध्यक्ष समाजवादी पार्टी मेहताब खान नगर अध्यक्ष समाजवादी पार्टी धर्मराज पटेल समाजवादी पार्टी नेता मंगला कोल वरिष्ठ सपा नेता साहेब अली समेत आदि लोग मौजूद रहे।

इलाहाबाद सांसद प्रोफेसर जोशी ने भाजपा के साथ गठबंधित निषाद पार्टी के करछना विधान सभा के प्रत्याशी पियूष रंजन निषाद के लिए जनसंपर्क किया

करछना प्रयागराज। आज दिनांक 14 फरवरी 2022 को इलाहाबाद सांसद के मीडिया प्रभारी अभिषेक शुक्ला ने एक विज्ञप्ति जारी कर बताया कि इलाहाबाद सांसद प्रोफेसर रीता बहुगुणा जोशी ने भाजपा के साथ गठबंधित निषाद

पार्टी के करछना विधान सभा के प्रत्याशी पियूष रंजन निषाद के लिए जनसंपर्क किया। सर्वप्रथम नैनी अरेल में माधुरी मिश्रा के घर पर चुनाव संबंधी बैठक किया एवं भाजपा के घोषणा पत्र के बारे में आम आदमी को जानकारी देने के लिए भाजपा कार्यकर्ताओं को निर्देशित किया। तत्पश्चात जगदीशपुर करछना में छोटे समूह में क्षेत्र के लोगों से चुनाव के संबंध में बैठक कर चर्चा किया इस दौरान गांव के प्रधान विजय शंकर त्रिपाठी, रमाशंकर द्विवेदी, डॉ सुजीत त्रिवेदी, रामकृष्ण द्विवेदी, मंडल अध्यक्ष अजय सिंह, बूथ अध्यक्ष कपिल देव, संतोष कुमार, रवि द्विवेदी, आकाश द्विवेदी, अवधेश पांडेय, मानसी पटेल, श्याम जी द्विवेदी, सूरज, दिलीप तिवारी, एवं पूर्व जिला मंत्री शांति पांडेय एवं पूर्व जिला पंचायत सदस्य त्रिवेणी प्रसाद पांडेय उपस्थित रहे साथ में कार्यकर्तागण आशीष पांडेय, श्री राम त्रिपाठी, मंडल उपाध्याय राजेंद्र तिवारी उपस्थित रहे। सांसद जोशी ने बृज मंगल सिंह इंटर कॉलेज रामपुर करछना में प्रत्याशी पीयूष रंजन निषाद के लिए वोट की अपील किया एवं चुनाव की रणनीति तैयार किया जिसमें प्रमुख रूप से डॉ0भगवत पांडेय, विनोद तिवारी, ग्राम प्रधान गोविंद द्विवेदी, विनोद पांडेय, अमित कुमार पांडेय, परशुराम मिश्रा, राजा राम मोहन मिश्र, सेक्टर संयोजक रामेश्वर प्रसाद मिश्र, पुष्पराज मिश्रा, घनश्याम शुक्ला, राधेश्याम, जगननथ तिवारी, प्रकाश मिश्रा, बूथ अध्यक्ष रामेश्वर द्विवेदी, रितेश मिश्रा, सेक्टर संयोजक सुनील शुक्ला, राम नरेश मिश्रा, बूथ अध्यक्ष मुनन ठाकुर, अशोक कुमार सेक्टर संयोजक उपस्थित रहे। बीसी सखी स्वयं सहायता समूहों के साथ चुनाव संबंधी बैठक किया एवं भाजपा की सदस्यता दिलाई बृज मंगल इंटर कॉलेज प्रांगण नैनी में। सांसद के साथ उनके जनसंपर्क प्रभारी संत प्रसाद पाण्डेय, जिला प्रतिनिधि यमुनापार राजेश त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

अवैध गांजा व तमंचा-कारतूस संग अभियुक्त हुआ गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। विधानसभा चुनाव को निष्पक्ष व शांतिपूर्ण ढंग से

सम्पनन कराए जाने के दृष्टिगत पुलिस द्वारा निरंतर चलाये जा रहे चेकिंग अभियान के दौरान नवाबगंज पुलिस ने एक अभियुक्त को गांजा तमंचा और कारतूस के साथ गिरफ्तार किया। थाना नवाबगंज के उ0नि0प्रभात कुमार सिंह मय टीम द्वारा शेषपुर धनापुर बार्डर पर चेकिंग की जा रही थी तभी एक स्कापिर्यों वाहन नम्बर यूपी 40 पी 6778 के चालक द्वारा वाहन को तेजी से मोड़कर भागने का प्रयास किया गया।उसे चेकिंग में लगे पुलिस कर्मियों द्वारा कुछ दूरी पर पकड़ लिया गया। स्कापिर्यों वाहन में बैठे व्यक्ति (चालक) से नाम-पता पूछा गया तो अपना नाम अर्जुन यादव पुत्र गंगाराम यादव निवासी सराय चौहान थाना मुगरा बादशाहपुर जनपद जौनपुर बताया जिसे चेक करने पर उसके कब्जे से 01 अदद अवैध तमंचा 315 बोर व 1 अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर बरामद हुआ व स्कापिर्यों वाहन को चेक करने पर उसमें रखे एक झोले से 1.5 किलोग्राम अवैध गांजा व गांजा बिक्री का 25760/- रूपया बरामद किया गया। उसके विरुद्ध मु0अ0सं0 24/2022 धारा 3/25 आर्म्स एक्ट थाना नवाबगंज प्रतापगढ़ । 02. मु0अ0सं0 25/2022 धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट थाना नवाबगंज प्रतापगढ़ में दर्ज किया गया।

प्रेक्षकगणों एवं जिला निर्वाचन अधिकारी की उपस्थिति में विधान सभा के राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ द्वितीय रैडमाइजेशन सम्पन्न

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराज। प्रेक्षकगणों एवं जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी श्री संजय कुमार खत्री की उपस्थिति में संगम सभागार में सोमवार को राजनैतिक दलों के साथ मतदान कार्मिकों का द्वितीय रैडमाइजेशन एवं ई0वी0एम0 तथा दो विधान सभा फाफामऊ एवं प्रतापपुर जहां पर 15 से ज्यादा प्रत्याशी है, वहां पर पूरक रैडमाइजेशन किया गया, इसलिए की वहां पर दो बीयू लगायी जायेगी। रैडमाइजेशन में प्रत्येक विधान सभावार स्क्रीन पर डिस्प्ले के माध्यम से दिखाया गया तथा सभी राजनैतिक दलों को विस्तार पूर्वक

का द्वितीय रैडमाइजेशन सोरांव, फूलपुर, हण्डिया, करछना, मेजा, शहर पश्चिमी, उत्तरी, दक्षिणी, बारा एवं कोरांव का किया गया बताया गया, जिसमें सभी विधान सभा के आर0ओ0 सहित प्रत्येक विधानसभा के राजनैतिक दल उपस्थित रहे।

होमगार्ड कर्मी एवं राजकीय बाल संप्रेक्षण गृह के कर्मचारी की अभिरक्षा से अपराधी द्वारा किशोर अपचारी को भगाने का प्रकरण

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराज। थाना शाहगंज पुलिस को सूचना मिली थी कि होमगार्ड के साथ अस्पताल आए हुए किशोर अपचारी को एक अपराधी द्वारा होमगार्ड को घायल कर छुड़ा लिया गया है । त्वरित

कार्यवाही करते हुए ना केवल किशोर अपचारी को ढूँढ कर हिरासत में ले लिया गया वरन् भगाने वाले अपराधी सुनील पाल को गिरफ्तार कर लिया गया। सुनील पाल के क़ब्ज़े से एक तमंचा भी बरामद हुआ है। शुरुआती पूछताछ में राजकीय बाल संप्रेक्षण गृह के केयर टेकर / सुपरवाइज़र और अन्य कर्मियों की भूमिका भी प्रकाश में आयी है। टीम द्वारा गहन छानबीन की जा रही है। घायल होमगार्ड की चोटें तमंचे की बट से आई हुई प्रतीत होती हैं, जो कि मामूली चोटें हैं। उसे कोई ख़तरा नहीं है। इलाज जारी है मुक़दमा दर्ज किया जा रहा है। इस प्रकरण में गहनता से छानबीन करने हेतु तेज़ तर्रार 5 टीमों का गठन किया गया है। शीघ्र ही कार्यवाही पूर्ण कर अवगत कराया जाएगा।

वरिष्ठ पत्रकार के घर तेरही भोज में जुटे कई दिग्गज

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

बहरिया (प्रयागराज) । मीरकपुर बहरिया निवासी जनसंदेश टाइम्स के वरिष्ठ पत्रकार शिव भगवान प्रजापति के मीरकपुर गांव आवास उनकी बड़ी माता सूर्यकली उम्र 60 वर्ष पत्नी खुन्नू लाल प्रजापति जिनका देहांत बीती 2 फरवरी को हुआ था। सोमवार शाम उनकी तेरही भोज में चुनावी मौसम होने के कारण कई राजनैतिक दलों के दिग्गज एवं विधानसभा प्रत्याशी गणो ने अपनी हाजिरी लगाते हुए मृतक की आत्मा की शांति हेतु उनके चित्र पर माल्यार्पण किया। इस मौके पर राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी सिद्धनाथ मौर्या अपने समर्थकों के साथ पहुंचे। तत्पश्चात भाजपा समर्थित प्रत्याशी प्रवीण पटेल अपने समर्थकों के साथ पहुंचे तथा कुछ ही क्षण बाद सपा प्रत्याशी हाजी मोहम्मद मुजतबा सिद्दीकी भी अपने समर्थकों के साथ पहुंचकर उपस्थिति दर्ज कराई। इस तेरही भोज कार्यक्रम में पत्रकारों की कड़ी में हिंदुस्तान संवाददाता ओम कृष्ण शुक्ला, आज संवाददाता त्रिकाली गुरु व समाजसेवी ललुन प्रजापति, राम लखन प्रजापति रिटायर्ड डी डी सी, रामशरन प्रजापति, रामआसरे प्रजापति आदि लोगों ने भी पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए मृतक की आत्मा हेतु 2 मिनट का मौन धारण करते हुए उनके चित्र पर माल्यार्पण किया।

मुज्तबा सिद्दीकी के समर्थन में समाजवादी कर्ताओं ने तूफानी जनसंपर्क किया

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

प्रयागराज। फूलपुर विधानसभा के सपा उम्मीदवार हाजी मुज्तबा सिद्दीकी के पक्ष में समाजवादी के नेता एवं कार्यकर्ता जनसंपर्क किया एवं समाजवादी के नीतियों के बारे में बताया हाजी मुस्तफा सिद्दीकी लोकल प्रत्याशी होने से उन्हें मतदाताओं का सन्ह एवं प्यार मिल रहा है जनसंपर्क में मोहम्मद नईम अब्दुल्लाह सिद्दीकी

ने कस्बे की अधिकांश मोहल्लों में जनसंपर्क किया एवं आगामी 27 फरवरी को होने वाले विधानसभा चुनाव में मुस्तफा सिद्दीकी को जिताने की अपील की गई एवं समाजवादी कार्यकर्ताओं ने जमीला बाद फरीदाबाद कोहना लोचन गंज इस्माईलगंज आदि मोहल्लों में नसीरुद्दीन राइन सैयद सोहेल अहमद शमशाद खान फिरोज राईन अरकान उर रहमान अतीक उर रहमान सैयद मोहम्मद रहीम इरतिजा सिद्दीकी उबैद उर रहमान शमशाद उर्फ शंमू आदि लोग उपस्थित रहे

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं। ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

क0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा	1 वर्ष	12वीं पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वीं पास
3.	बेसिक कम्प्युटिंग	6 माह	साक्षर
4.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वीं पास
5.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वीं पास
6.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वीं पास
7.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वीं पास
8.	सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वीं पास
9.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वीं पास
10.	रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वीं पास
11.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वीं पास
12.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वीं पास
13.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वीं पास

1.प्रमाण पत्रः- सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। **2.चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। **3.आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। **4.आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते है तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। **5.**आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। **6.कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनूमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। **7.छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। **8.** अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। **9.दाखिले की अंतिम तिथिः-** 15 फरवरी 2022

सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710,
9807278552, 9415608790

भाजपा की बाजार उखड़ गई पश्चिम की हवा से-रेवती रमण सिंह

(आधुनिक समाचार सेवा)
सत्य प्रकाश

प्रयागराज। करछना तहसील के सामने सपा प्रत्याशी उज्जवल रमण सिंह के केंद्रीय कार्यालय का उद्घाटन प्रयागराज 15 फरवरी। पश्चिम से आ रही हवाओं का रूख बता रही है कि भाजपा की बाजार उखड़ गई है।पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों ने वोट का चोट बहुत तगड़ा दिया है किसान विरोधी भाजपा सरकार को।उक्त बातें राज्य सभा सांसद कुंवर रेवती रमण सिंह ने ने करछना तहसील के सामने सपा प्रत्याशी उज्जवल रमण सिंह के केंद्रीय कार्यालय उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि सम्बोधन में कहा उन्होंने कहा कि सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सभी जाति धर्म के उत्थान का धोषणा पत्र दिया जिससें समाजिक समरसता बनने के साथ सबका विकास होगा। जिलाध्यक्ष योगेश यादव ने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि सपा कार्यकर्ता शिथिलता एकदम ना बरतें एक एक समाजवादी वोट को चिंहित कर 27फरवरी को डलवाने का कार्य

करें क्योंकि थोड़ी सी लापरवाही पांच साल भुगतना पड़ेगा। सपा प्रत्याशी करछना विधायक उज्जवल रमण सिंह ने कहा कि करछना के बहादुर कार्यकर्ता ही हमारी ताकत है बड़ी से बड़ी आंधी में भी ये ढाल बन कर खड़े रहे अब तो अखिलेश यादव की आंधी चल रही है इस आंधी में किसानों के रात की नींद और नवजवानों को बेरोजगार करने वाले उड़ जायेंगे।जनसभा का संचालन जिलाउपाध्यक्ष विनय कुशवाहा व अध्यक्षता जिला अध्यक्ष योगेश चंद्र यादव ने किया। सम्बोधित करने वालों में पूर्व विधायक गामा पाण्डेय, सत्यवीर मुनाना, रंजीता सोनकर,पुष्कर,करछना प्रमुख कमलेश द्विवेदी, चाका प्रमुख अनिल पटेल, कौंधियारा प्रमुख इंद्रनाथ मिश्रा,राजू सिंह,पप्पू गौतम,रंग बहादुर पाण्डेय,सोमदत्त पटेल, कमला शंकर ओझा, मानिक चंद्र पटेल, रविन्द्र यादव,पप्पू प्रधान. बाबा यादव,सनिल अहमद,दिनेश पटेल,श्रीकांत यादव, घनश्याम कोटार्य,शिवराम यादव आदि लोग रहे।

जानिए ये प्रत्याशी क्या-क्या रखते हैं शौक

आजमगढ़। मुबारकपुर विधानसभा क्षेत्र से समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी अखिलेश के पास कोई वाहन नहीं है। इनके पास बाइक भी नहीं है। नामांकन करने आए अखिलेश ने शपथ पत्र प्रस्तुत किया। इनके खिलाफ धरना-प्रदर्शन के तीन मुकदमा दर्ज है। अपनी सुरक्षा के लिए एक पिस्टल रखे हुए है। उनके पास 2.30 लाख रुपये है। वहीं उनकी पतने के पास 3.12 लाख रुपये है। गहनों के नाम पर उनके पास 60 ग्राम सोने का गहना है। पतने के पास इनके दोगुना 60 ग्राम सोने का गहना है। सुराई गांव के रहने वाले अखिलेश कृषि कार्य करते है। इनकी पतने गृहिणी है। अतरौलिया विधान सभा क्षेत्र के समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी डा. संग्राम यादव के पास करोड़ों की संपत्ति हैं। उसके खिलाफ राजनीतिक मुकदमा दर्ज है। इनके खिलाफ पांच मुकदमा जिले के विभिन्न थानों में धरना प्रदर्शन का मुकदमा दर्ज है। 1.11 करोड़ लखनऊ एबीआई व 25328 रुपये आजमगढ़ यूबीआई बैंक में जमा है। दस लाख बचत खाते है। नामांकन के दाखिल शपथ पत्र में उनके पास एक रिवाल्वर, 45 हजार का आईफोन व 70 हजार का आई पैड है। इन्होंने आयकर में 6.99 लाख वर्ष 2021-22 में आय दर्शाया हैं। वर्तमान में विधायक के साथ ही वह कृषि का भी कार्य करते है। अतरौलिया विधानसभा से निषाद पार्टी के प्रत्याशी प्रशांत कुमार सिंह के पास नकदी 40 हजार रुपये है। इनके पास 1.50 करोड़ की संपत्ति भी है। नामांकन पत्र में शपथ पत्र में पांच साल में इनकी आय पांच साल करीब 40 लाख रुपये हुई है। इनके नाम से कोई वाहन भी नहीं है। 28 लाख रुपये बैंकों में जमा है। सुरक्षा के लिए एक पिस्टल भी है। **गोपालपुर विस क्षेत्र के सपा प्रत्याशी के पास पिस्टल व रायफल** गोपालपुर विधानसभा क्षेत्र के समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी विधायक नफीस अहमद के पास रायफल व पिस्टल है। नामांकन के शपथ पत्र में उनके खिलाफ एक राजनैतिक मुकदमा दर्ज है। 3.50 लाख रुपये उनके हाथ में है। वाहन में बाइक व 70 हजार के आईपैड व लैपटाप है। बैंक में 20 लाख रुपये जमा है। आयकर में उन्होंने 4.36 लाख आया दर्शाया है। उनके पास 5.22 लाख रुपये की अचल संपत्ति है। **भाजपा प्रत्याशी के पास लखनऊ में आवासीय व यहां वाणिज्य भवन** गोपालपुर विधानसभा के भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी सत्येंद्र राय के पास नकदी एक लाख रुपये है। वह करोड़ों के मालिक भी है। नामांकन पत्र के शपथ पत्र में उन्होंने 12.18 लाख की वार्षिक आय को दर्शाया है। एक फर्च्यून गाड़ी है। विभिन्नबैंकों में 2.25 लाख रुपये जमा है। कृषि योग्य भूमि के अलावा लखनऊ में आवासीय व आजमगढ़ में वाणिज्य भवन है। इनके खिलाफ मारपीट का एक मुकदमा दर्ज है। **लालगंज के बसपा के प्रत्याशी के पास नकदी 10.50 लाख** लालगंज सुरक्षित विधान सभा सीट से बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी विधायक आजाद अरिमर्दन हथयारि से लैस हैं। इनके पास नकदी भी 10.50 लाख है। नामांकन पत्र के शपथ पत्र में इन सभी के अलावा फार्च्यूनर, जीप व 100 ग्राम सोने का गहना भी है। कइ एकड़ भूमि के मालिक भी है। शपथ पत्र में मारपीट का एक मुकदमा है, जो न्यायालय में विचाराधीन है। 21.47 लाख वार्षिक आय है। **सदर विस क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी के पास 75 हजार नकदी** सदर विधानसभा के भाजपा प्रत्याशी अखिलेश कुमार मिश्रा ने भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी के रूप में नामांकन पत्र दाखिल किया। दाखिल शपथ पत्र में इनके पास नकदी 57 हजार रुपये है।

सांसद प्रो,रीता बहुगुणा जोशी ने अपना दल के प्रत्याशी वाचस्पति के लिए किया जनसम्पर्क

(आधुनिक समाचार सेवा)
संजय द्विवेदी

बारा (प्रयागराज) ।आज दिनांक 15 फरवरी 2022 को इलाहाबाद सांसद के मीडिया प्रभारी अभिषेक शुक्ला ने एक विज्ञप्ति जारी कर बताया किइलाहाबाद सांसद प्रोफेसर रीता बहुगुणा जोशी ने बारा विधानसभा से अपना दल के प्रत्याशी वाचस्पति के लिए सभाएं कर जनसंपर्क किया। जनसंपर्क अभियान प्रातः 11 बजे से शुरू हुआ। भारतीय जनता पार्टी के साथ गठबंधित अपना दल के 264 बारा विधानसभा के प्रत्याशी वाचस्पति के केंद्रीय कार्यालय गोहानिया जसरा पहुंचकर चुनाव पर चर्चा किया। उपस्थित लोगों में मुख्य रूप से फूलचंद पटेल इंद्रजीत पटेल कमलेश त्रिपाठी जगत नारायण शुक्ला विजय बहादुर सिंह वंदना सिंह राज मणि पासवान राज बाबू पाठक रामजी त्रिपाठी आदि लोग

उपस्थित थे। जसरा मंडल के अंतर्गत मुख्य जसरा बाजार में जनसंपर्क कर वाचस्पति जी के समर्थन में वोट मांगा। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से कमलेश त्रिपाठी चंद्रप्रकाश त्रिपाठी जगत नारायण शुक्ला आनंद जायसवाल अनिल मिश्रा अश्वनी केसरवानी आशीष सोनकर प्रधान दीपचंद मोदनवाल मंजुला निषाद बबीता सिंह आदि लोग उपस्थित थे। जसरा मंडल के अंतर्गत बारा खास में जनसंपर्क कर वाचस्पति जी के समर्थन में वोट मांगा। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से नीरज केसरवानी हरकेश शर्मा आशीष केसरवानी बैजनाथ सोनी मोहित केसरवानी आशुतोष केसरवानी राम बिंद आदि लोग उपस्थित रहे। तत्पश्चात मनकामेश्वर मंडल के अंतर्गत बारा के लोहगरा बाजार खास में नुक्कड़ सभा किया तथा जनसंपर्क कर वाचस्पति जी के समर्थन में वोट मांगा। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से मंडल अध्यक्ष वंदना सिंह सूर्य प्रताप सिंह अजय जायसवाल रमेश बिंद राम चंद्र पाल प्रेम शंकर मिश्र रामभोला त्रिपाठी शिवकांत बिंद आदि लोग उपस्थित रहे।सांसद प्रोफेसर जोशी लोहगरा के अस्वस्थ अमरनाथ दुबे जी के आवास पर पहुंच कर हालचाल लिया। शंकरगढ़ बाजार में सभा कर उपस्थित लोगों को भारतीय जनता पार्टी के घोषणा पत्र के बारे में जानकारी दिया तथा केंद्र सरकार और प्रदेश सरकार की नीतियों के बारे में लोगों को बताया तथा जनसंपर्क कर वाचस्पति जी के समर्थन में वोट मांगा। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से मंडल अध्यक्ष कुलदीप पटेल गुड्डू पटेल शिवराम सिंह परिहार संतोष त्रिपाठी अनूप केशरवानी बृजेश सिंह पटेल राकेश विश्वकर्मा अंकित पटेल धीरज पाल राजन आदिवासी जगदीश कोल आदि लोग उपस्थित रहे।बारा विधान सभा के शंकरगढ़ मंडल के अंतर्गत बैरी बसहरा में जनसंपर्क कर वाचस्पति जी के समर्थन में वोट मांगा। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से क्या लिखे हो यादवेंद्र सिंह मास्टर साहब विनय शुक्ला संदीप सिंह राजकरण प्रधान वीरेंद्र सिंह उमेश शुक्ला रामजी त्रिपाठी आदि लोग उपस्थितथे बारा विधान सभा के अंतर्गत नारीबारी मंडल के ग्राम कसौठा में राघव राम संतारिया क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित क्रिकेट मैच में पहुंचकर खिलाडियों का उत्साहवर्धन किया तथा उपस्थित लोगों से अपना दल प्रत्याशी वाचस्पति के समर्थन वोट करने की अपील किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से ओ पी दुबे अरुण तिवारी रवि सिंह बबलू पाल तुलसी मिश्रा राजेंद्र गौतम विद्यासागर मिश्रा संतोष मिश्रा आदि लोग उपस्थित रहे।सांसद प्रोफेसर रीता बहुगुणा जोशी ने बारा विधानसभा के अंतर्गत नारी बारी मंडल के नारी बारी बाजार में आयोजित सभा में प्रमुख रुप से जिला महामंत्री विजय शंकर शुक्ला वीरेंद्र सिंह पटेल बालन प्रसाद चतुर्वेदी पूर्व प्रधान कमल सिंह नारीबारी प्रदीप चतुर्वेदी मंडल मंत्री पप्पू सिंह विवेक सिंह दिलीप केसरवानी अनिल चतुर्वेदी अंजनी लाल मंडल अध्यक्ष हरि किशन सिंह पटेल जय सिंह पटेल संतोष सिंह प्रधान दिवाकर सिंह पठन देवी दयाल शर्मा मनोज गुप्ता रामकृपाल सिंह हरेंद्र तिवारी रमाकांत विश्वकर्मा अनुराधा रतनकर पटेल सुरेश पाल गोकुल सिंह पटेल लड्डू पटेल फूलचंद पटेल बृजेश पटेल जवाहरलाल पटेल प्रभारी आदि लोग उपस्थित रहे।तत्पश्चात नारी बारी मंडल के अंतर्गत ग्राम कपड़ौर में सभा किया।जिसमें प्रमुख रुप से अंजनी लाल ठाकुर मंडल अध्यक्ष अर्क नाथ ठाकुर काशी प्रकाश द्विवेदी त्रिभुवन प्रसाद द्विवेदी जय सिंह पटेल मनोज गुप्ता गोमती लाल दुद्धन त्रिपाठी निर्मल नाइ देवेंद्र द्विवेदी आदि लोग उपस्थित रहे।नारीबारी बाजार में पैदल जनसंपर्क कर आम जनता से वाचस्पति जी को जीत का सेहरा पहनाने के लिए लोगों से अपना दल को वोट करने के लिए कहा गया है।नारी बारी मंडल में वरिष्ठ समाजसेवी स्व0पी.वी शर्मा के चित्र पर माल्यार्पण कर उनकी पतने से मिलकर हाल चाल लिया तत्पश्चात कौंधियारा मंडल के अंतर्गत जारी बाजार में सभा किया तथा अपना दल के प्रत्याशी वाचस्पति जी के समर्थन में उपस्थित लोगों से कप प्लेट के सामने वाला बटन दबाकर वोट करने की अपील किया।कार्यक्रम में प्रमुख रूप से कौंधियारा मंडल के अध्यक्ष शिव प्रसाद केसरवानी भानु मिश्रा हरि चरण सिंह प्रमोद कुमार द्विवेदी राजेंद्र प्रसाद पांडे दयाराम बिंद बिहारी लाल जयसवाल सुरेश चतुर्वेदी सुरेश केसरवानी कमलेश मिश्रा श्यामा कांत पांडे विद्या प्रसाद गुप्ता अजय कुमार कुशवाहा शिव भोला बिंद शालिग्राम केसरवानी बीडीसी दिनेश मिश्रा गिरजा शंकर पांडे बनारसी केसरवानी मुनन मिश्रा पप्पू सोनी बिहारीलाल जयसवाल नीरज मिश्रा अपना दल के बृजेश पटेल फूलचंद पटेल गुड्डू पटेल सचिन सिंह पटेल मिथिलेश पटेल चंद्र भूषण सिंह इंद्रजीत सिंह संत प्रसाद पाण्डेय चंद्र प्रकाश त्रिपाठी अभिषेक शुक्ला शिव शांत दिक्षित आदि लोग मौजूद रहे।

खुले स्कूल, हंसते खिलखिलाते पहुंचे बच्चे

गाजीपुर । कोविड संक्रमण की घटती रफ्तार के बाद प्रतिबंध हटते ही महीनों बाद सोमवार को विद्यालय पहुंचे बच्चे अपने सहपाठियों और अध्यापकों से मिलकर काफी खुश नजर आए। परिषदीयसहित सभी कान्वेंट स्कूल खुल गए। बच्चे कोविड प्रोटोकाल का पालन कर रहे थे। कई विद्यालय प्रबंधन ने अपने विद्याार्थियों का जमकर स्वागत सत्कार किया। कहीं फूल, कहीं

टाफी व बैलून दिए गए तो कहीं तिलक लगाकर मुंह मीठा कराया गया। लंबे समय बाद स्कूली परिसर में पढ़ाई को लेकर बच्चे उत्साहित नजर आए। वहीं लंच टाइम में अपने दोस्तों के साथ जमकर मौज-मस्ती भी किया। बच्चों को पाकर महिला और पुरुष अध्यापक भी काफी खुश नजर आ रहे थे। विद्यालयी शिक्षा के पहले दिन सभी बच्चों को कोविड प्रोटोकाल के पालन का निर्देश दिया गया। आनलाइन पढ़ाई के दौरान छूटे पाठ्यक्रम को दोबारा चरणबद्ध तरीके से निर्धारित समय में पूरा करने का समय सारिणी बनायी गई। खानपुर : स्थानीय क्षेत्र के राधिका रूरल स्कूल बभनौली, उमा पब्लिक स्कूल बेलहरी, शांति निकेतन स्कूल रामपुर, आदर्श शिक्षा निकेतन सिधौना सहित सभी निजी विद्यालयों में प्रथम दिन बच्चों को मनोरंजक माहौल में आगे के पढ़ाई की व्यवस्था बनाई गयी। बच्चों को स्कूल छोड़ने पहुचे अभिभावक भी विद्यालय परिसर में कोविड बचाव के व्यवस्थाओं की जानकारी लेते रहे। आधे-अधूरे बच्चों ने मास्क लगाया था। उन्हें पूरी तरह से सैनिटाइज किए गए कक्षा और फर्नीचर पर दूरी बनाकर बैठाया गया। सादात : सबसे ज्यादा खुशी परिषदीय विद्यालयों के स्कूलों में छोटे बच्चों के बीच देखने को मिली। खंडशिक्षाधिकारी सुरेंद्र नाथ प्रजापति ने बताया कि ब्लाक के सभी 146 प्राथमिक, कंपोजिट व पूर्व माध्यमिक विद्यालय खुल गए हैं। सभी जगहों पर कोरोना से बचाव का पालन के साथ पढा.ई सुचारू रूप से शुरू हो गई है। नगर क्षेत्र के सभी परिषदीय विद्यालयों में बच्चों के स्कूल आने पर प्रार्थना व पीटी वगैरह कराया गया। नगर स्थित प्राथमिक विद्यालय तृतीय में पचास प्रतिशत तक बच्चों की उपस्थिति रही। सोहिलापुर में न बच्चे न शिक्षक प्राथमिक विद्यालय सोहिलापुर में 10.30 बजे तक एक भी बच्चे नहीं पहुंचे थे। हालांकि प्रधानाध्यापक रूपा पांडेय उपस्थित थीं, लेकिन सहायक अध्यापक ममता यादव, शिक्षामित्र उषा यादव का कोई अता-पता नहीं था। स्कूल में कुल 70 बच्चे पंजीकृत है, लेकिन एक भी बच्चे का उपस्थित न होना शिक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़ा करने वाला है।

सपा महासचिव के प्रथम नगर आगमन पर हुआ जोरदार स्वागत

(आधुनिक समाचार सेवा)
संजय द्विवेदी

कोरांव (प्रयागराज)। सपा विधान सभा प्रभारी व जिला पंचायत सदस्य सोमदत्त सिंह पटेल को पार्टी एक और बड़ी जिम्मेदारी के

रूप में जिला महासचिव समाजवादी पार्टी प्रयागराज बनाकर युवाओं में जोश भरने का काम किया है। कोरांव विधानसभा में पार्टी के लिए सदैव तत्पर रहने एवं पार्टी को नित प्रति दिन नई मजबूती प्रदान करने वाले विधानसभा प्रभारी सोमदत्त सिंह पटेल को शीर्ष नेतृत्व के निर्देश पर जिला अध्यक्ष योगेश चंद्र यादव ने प्रमाणपत्र देकर संगठन को आगे बढ़ाने की बात कही। जैसे ही पार्टी द्वारा उनको जिला महासचिव बनाए जाने की घोषणा किया गया वैसे ही पार्टी कार्यकर्ता और पदाधिकारियों के साथ-साथ कोरांव के युवाओं में जोश और खुशी का ठिकाना नहीं रहा। इस मौके पर सोमदत्त सिंह पटेल नवनियुक्त जिला महासचिव समाजवादी पार्टी ने कहा कि जिस तरह से पार्टी ने एक आम कार्यकर्ता को जिले का प्रभार सौंपने का कार्य किया है उसके लिए हम सदैव पार्टी के आभारी रहेंगे और पार्टी द्वारा दिए गए जिम्मेदारियों का बखूबी निर्वहन करेंगे साथ ही साथ पार्टी की जीत में अपना पूरा दमखम लगाने का काम करेंगे। सोशल मीडिया, मैसेज एवं फोन पर बधाई देने वालों का तांता लगा रहा। बधाई देने वालों में मुख्य रूप से मेहताब खान, ओमप्रकाश कुशवाहा पवन सिंघल अखंड प्रताप भास्कर संजय यादव संदीप यादव दशरथ सोनकर सुमन कोल ओम सहाय रामानुज यादव महेंद्र यादव राजेश पांडेय, यादवेन्द्र अहिर, पवन सोनकर, सहादत अली,नौशाद अंसारी दिनेश पटेल रविंद्र जैसल धर्मराज पटेल अजीत पटेल भगवान पटेल हारुन अंसारी आदि लोग मौजूद रहे।

गरीबों व असहायो विकलांगों में वितरण किया गया कंबल

(आधुनिक समाचार सेवा)
सर्वेश कुमार यश

सेवापुरी (वाराणसी)। नीति सेवापुरी के गोसाईपुर तिवारीपुर में मंगलवार को सुबह गरीबों और असहायो विकलांगो बुजुर्गों को संपूर्ण

आयोग द्वारा चयनित मॉडल ब्लॉक जनहित विकास फाउंडेशन ट्रस्ट के अध्यक्ष शिवपाल शर्मा के सहयोग से समाजसेवी व पत्रकार श्री प्रकाश वर्मा पत्रकार देवेंद्र पटेल के द्वारा बनवासी बस्ती के लोगों दर्जनों लोगों को कंबल वितरित किया गया इस दौरान देवेंद्र पटेल ने कहा कि गरीबों की सेवा भगवान की सेवा के बराबर होता है उन्होंने आगे भी संकल्प लिया कि गरीब बुजुर्गों विकलांगों की सेवा निरंतर किया जाएगा तथा उनके हर दुख सुख में उनका सहयोग चढ बढ़कर किया जाएगा इस अवसर पर जगदीश पटेल गौरव जयसवाल हीरा खान कैलाश पटेल रामधार बाबूराम बनवासी सहित दर्जनों महिलाएं उपस्थित रहे।

संविधान को बचाये रखना हैं तो गलत नितियों का करना होगा विरोध-रणजीत सोनकर

(संविधान को खतरे से बचाने के लिये बि.एस.पी छोड़ सपा का पकड़े दामन)

(आधुनिक समाचार सेवा)
सत्य प्रकाश

प्रयागराज। बहुजन समाज पार्टी में लंबे समय से कार्य कर रहें वरिष्ठ नेता,नौजवानों की आवाज,युवाओं के शान माताओं बहनों के आश रणजीत सोनकर(प्रबंधक) जिन्होंने अपनी पुरी जवानी व जिंदगी बहुजन समाज पार्टी में कार्यकर्ता के रूप में समाज

व सविधांन को सुरक्षित रखने के लिये संघर्ष करते रहें,आज ओ समाज व संविधान को सुरक्षित रखने के लियें समाजवादी पार्टी को ज्वाईन कर सभी साथ में आये कार्यकर्ता एवं समाज को भरोसा दियें की जब तक हम जैसे सक्रिय कार्यकर्ता आपके बिच में है संविधान को सुरक्षित रखना हम सबकी जिम्मेदारी बनती हैं। और मैं संविधान एवं समाज को बचाये रखने के लिये हर एक कठिन से कठिन संघर्ष की लड़ाई को लड़ता रहूगां। क्योंकि जब तक संविधान सुरक्षित हैं तब तक हम सब सुरक्षित है। क्योंकि आज हमारा संविधान, लोकतंत्र पुरी तरह से खतरे में फसा है उस खतरे से बचाने के लिये हमे आपसी भेद-भाव हिंसा को त्यागकर एक प्लेटफार्म पर होकर संविधान,लोकतंत्र को बचाये रखना है। यही पर रणजीत सोनकर ने बताया की मै काफी लंबे समय से बहुजन समाज पार्टी में पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता के रूप में बाबा साहब के दियें गये विचारों एवं मान्यवर कांशीराम के निर्देशक पर पुरी ईमानदारी व निष्ठापूर्वक के साथ समाज के बिच में सक्रियता के साथ कार्य किया हूँ। मान्यवर कांशीराम जी को चले जाने से बहुजन समाज पार्टी अपने विचारधाराओं से भटक गई जो मान्यवर कांशीराम का सोच बाबा साहब का मिशन था ओ कहीं न कहीं रास्ते से भटकाया जा रहा है।और संविधान एवं लोकतंत्र पुरी तरह से खतरे में पड़ हुआ है। जिसके कारण दलितों, शोषितों के साथ उनके अधिकारों को छिना जा रहा है,उनकी आवाज को दबाया जा रहा हैं। हमारे लिये सबसे पहले संविधान हैं संविधान को बचाये रखने के लिये आज हम समाजवादी पार्टी के विचारधाराओं से पुर्ण रूप से सहमत होते हुयें ज्वाईन किया हूं। क्योंकि समाजवादी पार्टी कि विचारधारा संविधान व लोकतंत्र एवं दलितों, शोषितों की आवाज को बुलंद कर बाबा साहब के मिशन व उनके सपनो को साकार करने वाली पार्टी हैं जो संविधान के दायरे मे कार्य करती हैं। इस विचारधाराओं से सहमत होते हुयें सैकडों कार्यकर्ताओं के साथ समाजवादी पार्टी मे ज्वाईन कर अपने अधिकार की लड़ाई लड़ने के लियें संघर्ष करूगां। समाजवादी पार्टी और उज्जवल रमण सिहं ने रणजीत सोनकर एवं उनके साथ आये सैकडों कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करते हुयें उज्जवल रमण सिंह ने कहां की रणजीत सोनकर उनके साथ सोनकर समाज व साथ में जुड़े अन्य समाज को आने से समाजवादी पार्टी को बहुत ही मजबूती मिली है। विधानसभा 2022 में समाजवादी पार्टी सरकार बनी तो रणजीत सोनकर की अहम भुमिका व श्रेय होगा। रणजीत सोनकर ने समाजवादी पार्टी को भरोसा दिलाते हुये बोले की हम और मेरा सोनकर समाज के साथ जुड़े अन्य समाज के लोगों के साथ पुरी तनमयता के साथ समाजवादी पार्टी सरकार बनाने के लियें मेहनत करूगां। जिससे समाजवादी पार्टी कि सरकार बने और संविधान खतरे से बाहर हों।

ए एन एम ने किया बच्चों का टीकाकरण

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। नवीन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मैलहन की ए एन एम वीनू द्वारा मैलहन प्राथमिक विद्यालय पर जीरो से लेकर 5 वर्ष तक के बच्चों का नियमित टीकाकरण किया। जिसमें पोलियो खसरा टेटनेस आदि कई रोगों का टीका बच्चों को समय-समय पर लगता है। बीच गांव में उक्त कार्यक्रम रखने का फायदा तीन दर्जन से अधिक बच्चों व उनके अभिभावकों ने लिया। टीके में आशा बहू नेहा, मीरा, प्रभा, मंजू आदि मौजूद रही।

फूलपुर फ्लाईओवर का कार्य अधूरा

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

.फूलपुर। फूलपुर में फ्लाईओवर के मरम्मतीकरण का कार्य अभी आधा अधूरा है। दीवाल के ऊपर रंगीन प्लास्टिक की जालियां लगाई जा रही हैं। सड़क पर कुछ दूर तक पैचिंग तथा लेपन कार्य हुआ है। मंगलवार को कुछ देर खुला तो छोटे वाहनों ने रफ्तार भरी। जिस हिसाब से कार्य हो रहा है। पूरा सप्ताह लग सकता है। आवागमन हेतु सबसे परेशानी मुबारकपुर रोड से आने जाने वालों को है। इसके लिए कोई अच्छा विकल्प ना होने के कारण पूर्वी फाटक से गोमती कॉलेज सिकंदरा रोड से बाबूपुर वाली गली में भीषण जाम लग रहा है। बाईपास ना बनाने के कारण राहगीरों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

माइक्रो आब्जर्वर ने किया पोलिंग बूथों का निरीक्षण

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। मंगलवार दोपहर प्रतापपुर विधानसभा के कई बूथों का माइक्रो अब्जर्वर ने निरीक्षण किया। मैलहन प्राथमिक विद्यालय के 35, 36, 37 तीनों बूथों का निरीक्षण सूक्ष्मता से किया। मौके पर मौजूद बीएलओ अरुणा सिंह एवं नेहा कुमारी से जानकारी ली। अरुणा ने बताया कि मैडम माइक्रो अब्जर्वर ने प्रकाश व्यवस्था पेयजल टूटा गेट आदि पर चिंता व्यक्त की। बता दें कि यहां का सोलर पैनल चोरी हो जाने के कारण उक्त सिस्टम भी बेकार है। इसके बाद टीम ने मोहम्मदाबाद मैलवन प्राथमिक विद्यालय के बूथो का निरीक्षण किया। मैलहन पोलिंग बूथ तक पहुंचने का रास्ता गड्ढा तथा जलजमाव युक्त है। जिससे मतदाता गुजरेंगे रास्ते में मुख्य मार्ग पर नाबदान का पानी भरा है। यह मैलहन कोनार रोड है। जिसकी दुर्दशा पर गिट्टी डालकर मतदाताओं का आवागमन सुचारू रूप से हो। इसके लिए स्थानीय प्रशासन को चेतना चाहिए।

प्रयागराज में चलेगी हवा में उड़ने वाली बस - नितिन गडकरी

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराज। केंद्रीय मंत्री नितिन

गडकरी ने मंगलवार को शहर पश्चिमी विधानसभा के झलवा चौराहे के पास आयोजित एक जनसभा में कहा कि प्रयागराज में अब हवा में उड़ने वाली बस चलाई जाएगी। इसका डीपीआर तैयार हो रहा है। गडकरी ने कहा कि डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य को भी उन्होंने इसकी जानकारी दे दी है। जनसभा में गडकरी ने कहा कि उनकी इच्छा है कि वह दिल्ली से प्रयागराज के लिए सी प्लेन में बैठे हैं और यहां त्रिवेणी संगम पर उतरे। गडकरी बोले कि इच्छा भी उनकी पूरी होने जा रही है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हाइड्रोजन फ्यूल का इस्तेमाल भी अब पड़ेगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश में गनन बहुतायत मात्रा में होता है। इसकी मदद से इथेनाल बनेगा जो गाड़ियों में डाला जाएगा। अभी जो गाड़ियां 110 रुपये लीटर पेट्रोल से चल रही है, उसमें इथेनाल का प्रयोग होने से यह खर्च 68 रुपये पर आ जाएगा। नितिन गडकरी ने कहा कि मैं ऐसा मंत्री हूं जो बोलता हूं वह करके दिखाता हूं।

डीजे पर डांस के दौरान बरातियों पर हमला, पांच घायल

बलरामपुर (आजमगढ़)। सिधारी थाना क्षेत्र के आरटीओ आफिस के समीप रविवार की रात द्वारपूजा के समय डीजे पर डांस के दौरान पुरानी रंजिश को लेकर बरातियों पर हमला कर दिया गया। इसमें पांच लोग गंभीर रुप से घायल हो गए, जिसमें दो की हालत गंभीर बताई गई है। मौके पर पहुंची डायल 112 पुलिस को देखते हमलावर फरार हो गए। बिलरियांगज थाना क्षेत्र के कंधारपुर गांव निवासी जयबहादुर ने अपने पुत्र राजन की शादी सिधारी वाले राजेश राम की बहन से तय की। लड़के वाले शाम को बरात लेकर लड़की के दरवाजे पहुंचे, जहां खूब खातिरदारी की गई। द्वारपूजा का कार्यक्रम लगा तो बगल में डीजे पर बराती और घराती डांस कर रहे थे।

बाइक ने गाय को मारी टक्कर मौके पर गाय कि हुई मौत बाइक सवार दो गम्भीर

(आधुनिक समाचार सेव)
अनिल कुमार अग्रहरी

डाला (सोनभद्र) । चोपन थाना क्षेत्र के गुरमुरा में आज सोमवार को एक बाइक सवार ने एक गाय को जोरदार टक्कर मार दिया जिसमें गाय की मौके पर मौत हो गई और बाइक सवार दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए प्राप्त जानकारी के अनुसार बाइक सवार दुद्धी से राबर्ट्सगंज जा रहे थे कि गुरमुरा काली मंदिर के पास अचानक एक गाय सामने आ गया और बाइक सीधे गाय को धक्का मार दिया जिसमें बाइक सवार अशोक मौर्या लगभग 45 वर्ष, नागेश मौर्या (20) निवासी धरनी पुर कोतवाली राबर्ट्सगंज गम्भीर रूप घायल हो गए और गाय की मौके पर मौत हो गई। स्थानीय लोगो ने बताया कि बाइक की रफ्तार इतनी तेज थी कि धक्का लगते गाय की मौके पर मौत हो गई। वही ओबरा के पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि रमेश यादव रेनुकूट से आ रहे थे कि

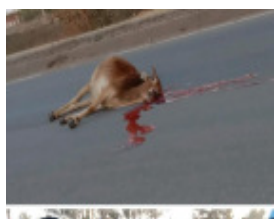

घटना को देखते हुए डॉयल 108 न0 एम्बुलेंस को सूचना देते हुए एम्बुलेंस द्वारा घायलों को चोपन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भिजवाया।

राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन ऑडी द्वारा पुलवामा शहीदों को दी श्रद्धांजलि

(आधुनिक समाचार सेवा)
कुशल गुप्ता

अनपरा (सोनभद्र)। राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन औड़ी के तत्वावधान में आयोजित पुलवामा आतंकी हमले में शहीद हुए सभी हिन्द के वीर जवानों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी गई मौके पर रविजीत सिंह कंग ,गोपाल दास गुप्ता , कृष्णा चौरसिया, सुरेंद्र परमार, राजीव यादव,कुशल गुप्ता, राहुल जैन इत्यादि ऑडी के व्यापारियों ने 2 मिनट का मौन रख कर पुलवामा शहीदों को श्रद्धांजलि दी ।

कैमूर वन क्षेत्र में बढ़े तेंदुए, अब संख्या हुई 15

सोनभद्र । कैमूर वन प्रभाग के लिए अच्छी खबर है। कैमूर वन क्षेत्र में अब तेंदुओं की चहलकदमी तेज हो गई है। इनकी संख्या में भी तेजी से इजाफा हो रहा है। वर्ष 2016 के पहले इनकी संख्या जहां कैमूर वन क्षेत्र में नगण्य थी वहीं अब इनकी संख्या में तेजी से इजाफा हुआ है। वर्तमान में यहां कुल 15 की संख्या में तेंदुए विचरण कर रहे हैं। कैमूर वन प्रभाग के घोरावल, हलिया, राबर्ट्सगंज और गुर्मा रेंज में तेंदुए की चहलकदमी अब आम बात हो गई है। हालांकि पहले कभी कभी इनके दिखने की बात सामने आती थी। विभागीय आंकड़ों पर गौर करें तो वर्ष 2016 में कराए गए गणना में एक तेंदुए के पदचिन्ह मिलने की बात सामने आई थी लेकिन वर्ष 2019 में हुई गणना में इनकी संख्या तेजी से बढ़ गई। वर्ष 2019 में कुल 12 तेंदुए कैमूर वन प्रभाग के घोरावल, हलिया, राबर्ट्सगंज तथा गुर्मा रेंज में देखे गए थे। अब यह संख्या 15 हो गई है। इसमें सबसे अधिक घोरावल और हलिया रेंज में तेंदुए दिखाई देने की बात सामने आई। इसके अलावा राबर्ट्सगंज और गुर्मा में भी इन्हें देखा गया है। विभाग के जानकारों की मानें तो तेंदुए गुफाओं, पहाड़ियों की दरारों और पेड़ों पर रहना ज्यादा पसंद करते हैं। पेड़ों

पर से ही वे अपने शिकार पर निगाह बनाए रखते हैं। शिकार देखकर वे तेजी से उसकी ओर झपटते हैं और उन्हें अपने कब्जे में कर लेते हैं। ये अपने वजन के बराबर तक के शिकार कर उन्हें पेड़ों पर ले जाकर आराम से खाते हैं। वर्जन कैमूर वन प्रभाग के घोरावल, हलिया, राबर्ट्सगंज और गुर्मा वन रेंज में तेंदुए की संख्या में इजाफा हुआ है। इनकी संख्या 15 हो गई है। इसमें सात नर, छह मादा और दो बच्चे शामिल हैं। आने वाले दिनों में इनकी संख्या और भी बढ़ने की संभावना है। कैमूर वन प्रभाग में तेंदुओं के लिए अनुकूल वातावरण है। यहां उनके रहने, खाने और पीने के पानी की उपलब्धता के कारण इनकी संख्या में इजाफा हुआ है। कैमूर वन प्रभाग के वन्य जीव प्रतिपालक राकेश कुमार ने बताया कि पड़ोसी राज्य मध्य प्रदेश में तेंदुए की संख्या अधिक है। वहां से भटक कर आए तेंदुए कैमूर वन प्रभाग में आए। कैमूर वन प्रभाग में उन्हें अनुकूल वातावरण मिला और वे इसी क्षेत्र में विचरण करने लगे। इसका सबसे प्रमुख कारण उनके रहने, खाने और पानी की संख्या कैमूर वन प्रभाग में लकड़बग्घा की संख्या भी घट बढ़ रही है। विभागीय आंकड़ों पर गौर करें तो वर्ष 2013 में इनकी संख्या 12 थी लेकिन वर्ष 2016 में जब गणना कराई गई तो इनकी संख्या घट कर आठ हो गई। वर्ष 2019 में इनकी संख्या में एक बार फिर इजाफा हुआ। वर्ष 2019 में इनकी संख्या बढ़कर 19 हो गई।

जंगलों में सघन कांबिग, नक्सल गतिविधियों को लेकर अलर्ट

सोनभद्र। विधानसभा चुनाव को लेकर पुलिस के जवानों ने सोमवार को जंगलों में सघन कांबिंग की। इस दौरान नक्सली गतिविधियों के बाबत ग्रामीणों को अलर्ट किया गया। विभिन्न थानों की पुलिस नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में कांबिग कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया गया। लोगों को मतदान के लिए प्रेरित किया गया। कोन व मांची थाना पुलिस ने जंगलों में कांबिग के दौरान सुरक्षा के बाबत आमजन को जागरूक किया। इस दौरान जवानों ने लोगों से भयमुक्त होकर मतदान करने व पुलिस का सहयोग करने की अपील की। चौकी सुअरसोत, थाना मांची क्षेत्र के ग्राम बाकी, धोबी के दूरस्थ व जंगली इलाकों में नक्सल आपरेशन कार्यक्रम के तहत पुलिस व पीएसी जवानों ने सघन कांबिग की। इस दौरान स्थानीय लोगों से वार्ता कर उन्हें आगामी चुनाव में भयमुक्त होकर मतदान करने व मुख्य धारा में रहकर पुलिस का सहयोग करने की अपील की गई। किसी तरह की संदिग्ध गतिविधि दिखने या नक्सली संचरण के विषय में जानकारी होने पर तत्काल पुलिस एवं स्थानीय प्रशासन को अवगत कराने के लिए कहा। उधर कोन थाना पुलिस ने थाना प्रभारी रमेश यादव के नेतृत्व में भारी पुलिस बल के साथ हर्रा व कुड़वा के जंगलों में कांबिग की। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि शांति व्यवस्था कायम रखने के लिए क्षेत्र में लगातार कांबिग व फ्लैग मार्च किया जा रहा है। आगामी विधानसभा चुनाव निष्पक्ष व शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए मतदाताओं को जागरूक किया गया। जंगल के आसपास रहने वालों को जागरूक करते हुए किसी के बहकावे में न आने भयमुक्त होकर मतदान करने को प्रेरित किया। उनकी समस्याओं से अवगत होते हुए हरसंभव मदद का भरोसा दिलाया गया।

घोरावल विधायक समेत पांच लोगों ने किया नामांकन

सोनभद्र। विधानसभा चुनाव की प्रक्रिया के तहत सोमवार को घोरावल विधायक अनिल मौर्या सहित पांच प्रत्याशियों ने नामांकन पत्र दाखिल किया। 36 लोगों ने 47 नामांकन पत्र खरीदे। इस दौरान

कलेक्ट्रेट पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम रहे। कलेक्ट्रेट मोड़ से लेकर परिसर तक भारी संख्या में फोर्स डटी रही। तलाशी अभियान के बाद ही कलेक्ट्रेट परिसर में किसी को प्रवेश दिया गया। सोमवार को नामांकन पत्र दाखिल करने वाले सभी प्रत्याशी घोरावल विधानसभा के हैं। नामांकन पत्र दाखिल करने वालों में अनिल मौर्या भारतीय जनता पार्टी, मोहन सिंह कुशवाहा बहुजन समाज पार्टी, अनिता कोल जनता दल यूनाइटेड से, सुरेश कोल सीपीआइ माले से व रानी सिंह ने जन अधिकार पार्टी से अपना नामांकन पत्र रिटर्निंग अधिकारी/उप जिलाधिकारी घोरावल रमेश कुमार के समक्ष उपस्थित होकर प्रस्तुत किया। एडीएम राकेश सिंह ने बताया कि सोमवार को चारों विधानसभाओं के लिए कुल 36 लोगों ने 47 नामांकन पत्र खरीदे। नामांकन के दौरान एडीएम राकेश सिंह, एएसपी विनोद कुमार ने संयुक्त रूप से नामांकन स्थल पर सुरक्षा का जायजा लिया और संबंधितों को आवश्यक दिश निर्देश दिए। सोमवार को नामांकन प्रक्रिया के तृतीय दिन रिटर्निंग आफिसर/उप जिलाधिकारी घोरावल रमेश कुमार के यहां से 9 लोगों ने 13 नामांकन पत्र लिया। रिटर्निंग आफिसर/उप जिलाधिकारी राबर्ट्सगंज राजेश कुमार सिंह के यहां से 15 लोगों ने 15 नामांकन पत्र खरीदे। रिटर्निंग आफिसर/उप जिलाधिकारी ओबरा जैनेंद्र सिंह के यहां से 7 प्रत्याशियों ने 14 नामांकन पत्र लिया। रिटर्निंग आफिसर/उप जिलाधिकारी दुद्धी प्रमोद तिवारी के यहां से 5 उम्मीदवारों ने 5 नामांकन पत्र लिया। इस दौरान अपर जिलाधिकारी ने निरीक्षण सीसीटीवी कैमरे के संचालन, नामांकन प्रक्रिया के ड्यूटी में लगे कार्मिकों आदि के संबंध में जानकारी ली। इस मौके पर अपर पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार, अपर जिला सूचना अधिकारी विनय कुमार सिंह सहित अन्य संबंधित उपस्थित रहे।

खुले में राख भंडारण से बढ़ा वायु प्रदूषण का संकट

अनपरा (सोनभद्र) । कृष्णशिला रेलवे साइडिंग से इन दिनों कोयला व तापीय परियोजनाओं से निकलने वाली राख का परिवहन भंडारण साइडिंग पर किया गया है। इससे धूल का गुबार बनकर पूरे क्षेत्र में छा जा रहा है। राख के उड़ते धूल से आसपास के बस्तियों

मालगाड़ी से जोरों पर है। इससे वायु प्रदूषण का संकट बढ़ता जा रहा है। हजारों टन राख का के लोगों का जीना मुहाल हो गया है। साइडिंग पर प्रदूषण से बचाव के लिए पानी का छिड़काव नहीं किया जाता है। प्रदूषण नियंत्रण विभाग की ओर से कभी भी इस साइडिंग पर बचाव के लिए कोई गाइड लाइन जारी नहीं किया गया। विभाग को तो पता ही नही है कि साइडिंग पर प्रदूषण की भयावहता किस कदर कायम है। राख के अति सूक्ष्म कण आसानी से शरीर के अंदर प्रवेश कर विभिन्न बीमारियों को बढ़ावा दे रहें है। प्रतिदिन करोड़ों का राजस्व देने वाला यह रेलवे साइडिंग तमाम मूलभूत सुविधाओं से अछूता है। आगामी गर्मी के मौसम में लू के दौरान उड़ने वाली राख की भयावहता को सोच लोग अभी से सहमे हुए हैं। एनजीटी की ओवर साइट कमेटी ऊर्जांचल में अक्सर दौरा करती रहती है लेकिन कतिपय कारणों से साइडिंग की ओर प्रदूषण का आंकलन नहीं किया जाता, जिससें निरंतर प्रदूषण का ग्राफ बढ़ता जा रहा है।

बसपा प्रत्याशी मोहन के पास रिवाल्वर व एक रायफल

सोनभद्र। बहुजन समाज पार्टी से घोरावल से नामांकन करने वाले मोहन कुशवाहा के पास दो असलहे हैं। इसमें 32 बोर का एक रिवाल्वर व 315 बोर की एक रायफल है। इसके अलावा उनके पास 100 ग्राम सोना है जिसकी कीमत करीब 4 लाख रुपये है। पत्नी के पास करीब पांच लाख रुपये कीमत का 150 ग्राम सोना व करीब 65 हजार रुपये कीमत की एक किलो चांदी है। मोहन ने अपने शपथ पत्र में दिया है कि उन पर धोखाधड़ी का एक मुकदमा राबर्ट्सगंज कोतवाली में है जिसको लेकर सिविल जज जूनियर डिविजन के पास अंतिम रिपोर्ट गई है। उनके पास 6 लाख रुपये नकद व पत्नी के पास 2 लाख रुपये हैं। 1.59 एकड़ कृषि भूमि अनुमानित लागत करीब 50 लाख, 1760 वर्ग फीट गैर कृषि भूमि अनुमानित लागत करीब 60 लाख रुपये है। 1760 फीट में आवासीय भवन बना हुआ है जिसकी अनुमानित कीमत करीब 40 लाख रुपये है। उन पर कुल दायित्व 9139606 रुपये हैं। मोहन प्रसाद वर्तमान में चुर्क से जिला पंचायत सदस्य भी हैं। भाजपा के अनिल मौर्या 17 को दाखिल करेंगे शपथ पत्र घोरावल से भाजपा के प्रत्याशी विधायक अनिल कुमार मौर्या ने सोमवार को नामांकन पत्र दाखिल किया लेकिन उसमें संपत्ति से जुड़ा शपथ पत्र नहीं दिया। घोरावल के रिटर्निंग आफिसर रमेश कुमार ने बताया कि अनिल मौर्या 17 फरवरी को पुनः नामांकन दाखिल करेंगे और उसमें संपत्ति का भी विवरण देंगे।

मारपीट कर रहे चार लोग गिरफ्तार

रेणुकूट (सोनभद्र)। पिपरी पुलिस ने आपस में मारपीट कर रहे चार लोगों को सोमवार को शांति भंग में चालान कर दिया। थाना प्रभारी अजय कुमार सिंह ने बताया कि रेणुकूट निवासी अकरम, अब्दुल नसीम, सूरज व दिनेश आपस में किसी बात को लेकर विवाद कर रहे थे। सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने सभी को गिरफ्तार कर धारा 151 के तहत चालान कर दिया।

समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी द्वारा जनसंपर्क

(आधुनिक समाचार सेवा)
अश्विनी कुमार ठाकुर.

अनपरा (सोनभद्र)। आज समाजवादी पार्टी प्रत्याशी द्वारा ओबरा विधानसभा 402 माननीय

सुनील सिंह गोंड द्वारा डिबुलगंज से लेकर अनपरा बाजार में जनसंपर्क किया गया जिसमें काफी काफी मात्रा में भीड़ उपस्थित रहे इसमें मुख्य रूप से समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष विजय यादव, विधानसभा अध्यक्ष श्री परमेश्वर यादव, विधानसभा महासचिव श्री अमरनाथ यादव, विधानसभा उपाध्यक्ष जुल्फिकार , पूर्व विधायक श्री सुनील सिंह यादव जिला सचिव श्री भोला नाथ निषाद जिला सचिव अली आजाद श्रवण यादव प्रदीप यादव राष्ट्रीय राष्ट्रीय नाई महासभा के प्रदेश सचिव एवं मीडिया प्रभारी अश्विनी कुमार ठाकुर नगर अध्यक्ष देवी नाथ यादव नगर महासचिव असलम खान आदि कई महान हस्तिया उपस्थित रहे।

परिषदीय विद्यालय गुलजार, बढ़ी रौनक

सोनभद्र। धीमी पड़ी कोरोना की तीसरी लहर के बीच 45 दिन बाद सोमवार से परिषदीय विद्यालय खुल गए। बच्चों के

पहुंचने से विद्यालयों में रौनक बढ़ गई। 31 दिसंबर से कोरोना का अवकाश घोषित होने के नाते विद्यालय वीरान से हो गए थे। सोमवार को कोविड गाइड लाइन का पालन करते हुए बच्चों को प्रवेश दिया गया। इसके साथ ही स्कूल में उनका पठन-पाठन शुरू हुआ। आनलाइन व मोहल्ला क्लास पर विराम लग गया। कोरोना की तीसरी लहर अभी ठंडी नहीं पड़ी है लेकिन उसका असर काफी हद तक कम हो गया है। अब कोविड संक्रमितों की संख्या भी काफी कम है। इसको ध्यान में रखते हुए प्रदेश शासन ने सोमवार से परिषदीय विद्यालयों में भी कोविड गाइड लाइन का पालन करते हुए पठन-पाठन की स्वीकृति दे दी। इससे बच्चों के चेहरे खिल गए हैं। 31 दिसंबर से कोरोना अवकाश घोषित होने से बच्चे घरों में पड़े थे। उनकी पढ़ाई ठप थी लेकिन इसी बीच बेसिक शिक्षा निदेशालय ने 100 दिवसीय रीडिग कैंपेन शुरू करा दिया ताकि बच्चों की बौद्धिक क्षमता कम न हो और उनकी पढ़ाई निरंतर चलती रहे। ऐसे में शिक्षक मोहल्ला क्लास, आनलाइन क्लास, झोला पुस्तकालय आदि के जरिए बच्चों को शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर रहे थे। विद्यालयों में बच्चों की उपस्थिति बंद थी, जबकि शिक्षकों की उपस्थिति अनिवार्य की गई थी। ऐसे में विद्यालयों में वीरानी सी थी। सोमवार से विद्यालय खुले तो बच्चे भी चहकते हुए पढ़ाई के लिए पहुंचे। इससे विद्यालय गुलजार हो गए और उनकी रौनक बढ़ गई। मल्टी स्टोरी विद्यालय राबर्ट्सगंज समेत तमाम विद्यालयों में बच्चों को थर्मल स्कैनिग के बाद प्रवेश दिया गया। नगरीय क्षेत्रों से लेकर ग्रामीण इलाकों तक के विद्यालय खुले और पठन-पाठन सुचारू रूप से शुरू हो गया। 31 दिसंबर से कोविड संक्रमण के बढ़ते प्रभाव के कारण परिषदीय विद्यालयों में पठन-पाठन बंद हो गया था। सोमवार से विद्यालय खुल गए हैं। शिक्षकों को निर्देश दिए गए हैं कि वे नियमित रूप से विद्यालयों में उपस्थित रहें और बच्चों का पठन पाठन सुचारू रूप से चलाएं। खंड शिक्षा अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि वे शिक्षक कार्य की निरंतर मानिटरिग करते रहें।

व्यसायी के बंद मकान को खंगाला, 10 लाख के माल उड़ाए

मीरजापुर । शहर कोतवाली के वासलीगंज लक्ष्मण प्रसाद की गली मोहल्ला निवासी गल्ला व्यवसायी के बंद पड़े मकान के दरवाजे का ताला तोड़कर चोर जेवरात सहित

करीब 10 लाख रुपये के सामान पार कर दिए। मंगलवार की सुबह घर लौटे मकान मालिक के बेटे ने घटना की सूचना पुलिस को दी। मौके पहुंची पुलिस छानबीन कर लौट गई। अनिल कुमार अग्रहरि गल्ला व्यवसायी हैं। 20 जनवरी को वह लकवाग्रस्त हो गए। ऐसे में स्वजन उन्हें इलाज के लिए मुंबई ले गए थे। इसी बीच चोर मौका ताड़कर उनके मकान के दरवाजे का ताला तोड़कर करतूत को अंजाम दे डाले। वह पूरे कमरे को खंगाल डाले। आलमारी में रखे करीब 50 हजार नकदी व आठ लाख रुपये के जेवरात सोने के चेन, कधरनी, मांगटीका, झुमका, कंगन, अंगूठी, नथिया, छागल के साथ टीबी, कपड़ा, आदि सामान उठा ले गए। 14 फरवरी रविवार को पड़ोस के लोगों ने बताया कि उनके छत पर कुछ सामान बिखरे पड़े हैं। ऐसा लग रहा है कि घर में चोरी हुई है। यह सुन अनिल के बेटे अनमोल मंगलवार को घर पहुंचे। देखने से ऐसा लगा कि वे लोग चार पहिया वाहन लेकर आए थे और सारे सामान उसमें लादकर उठा ले गए। स्वजन ने बताया कि चोर जो सामान ले गए सो ले गए जो घर में जैसे आलमारी, बक्सा, पलंग आदि सामान को भी नुकसान पहुंचा दिया है जिससे वह अब किसी काम के नहीं हैं। उन लोगों ने काफी नुकसान पहुंचाया है। कोतवाल अरविद कुमार मिश्रा ने बताया कि घटना का जल्द ही पर्दाफाश कर दिया जाएगा। इलाके के सीसी टीवी के फुटेज निकाले जा रहे है। आरोपितों के बारे में सुराग लगाए जा रहे हैं

माघी पूर्णिमा आज, घाटों से लेकर मंदिर तक होंगे गुलजार

मीरजापुर । सन्न-ध्यान का पर्व माघी पूर्णिमा आज यानी बुधवार को मनाया जाएगा। माघी पूर्णिमा पर गंगा सनन करने का विशेष महत्व है। इसको लेकर घाट से लेकर मंदिर तक श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ेगी। विध्याचल से लेकर नगर के अधिकांश गंगा घाटों पर अव्यवस्थाओं के बीच सन्नार्थियों को सावधानी बरतनी होगी। शहर के साथ गंगा घाटों पर सफाई की जिम्मेदारी नगर पालिका की है। नगर पालिका की ओर से सफाईकर्मी तो लगाए गए हैं, लेकिन सफाई व्यवस्था नदारद है। हालांकि कुछ गंगा घाटों पर

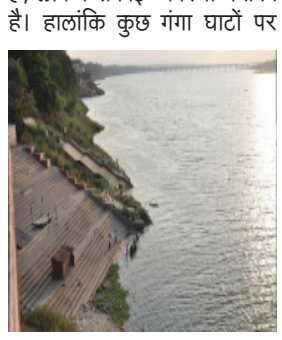

कुछ हद तक व्यवस्था ठीक है तो कुछ गंगा घाटों पर श्रद्धालु खुद ही व्यवस्था करते हैं, जबकि गंगा घाटों पर सफाई के साथ सुरक्षा व्यवस्था भी करनी चाहिए, ताकि सनन के दौरान कोई अनहोनी न होने पाए। नगर के कचहरी घाट, बरियाघाट, सुंदरघाट, बाबा घाट, पक्का घाट, नारघाट से लेकर विध्याचल तक गंगा घाटों पर सन्नार्थियों की भीड़ उमड़ेगी। गंगा सनन के बाद श्रद्धालु भगवान सूर्य व लक्ष्मी नारायण की एक साथ पूजन-अर्चना कर सुख समृद्धि की कामना करेंगे और दान पुण्य भी करेंगे।

गैस चूल्हे से निकली चिगारी बनी शोला, मकान संग गृहस्थी राख

पटेहरा (मीरजापुर) । लालगंज क्षेत्र के अमोई पुरवा के नौपुरवा टोल में मंगलवार को गैस चूल्हे की चिगारी शोला बनकर पूरे घर को अपने आगोश में ले लिया। अगलगी की घटना में गृहस्थी के साथ हजारों रुपये का सामान राख में तब्दील हो गया। ग्रामीणों की मदद से कड़ी मशक्कत बाद आग पर काबू पाया जा सका। मौके पर पहुंचे लेखपाल ने पीड़ित परिवार को सरकारी सहायता दिलाने का आश्वासन दिया रामनरेश चूल्हे पर गरम करने के लिए पानी रखकर बोर पर और पानी लेने चले गए। इसी बीच चूल्हे से निकली चिगारी से कच्चे घर में आग लग गई। घर से निकलते धुएं को देख पड़ोसी कमलेश की पतनै रीता ने दौड़कर घर में सोए धीरू आदि लड़कों को बाहर निकाला, अन्यथा बड़ा हादसा हो जाता। इसी बीच देखते ही देखते आग विकराल रूप धारण कर लिया। बस्ती के लोग पानी फेंककर आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन तब तक घर में रखा घरेलू सामान के साथ दो साइकिल, तीन चारपाई, बिस्तर, रजाई- कंबल, मोबाइल, दो चांदी की पायल, राशन कार्ड व आधार कार्ड, चावल, गेहूं, दाल, चना, सरसो समेत बर्तन खाक हो गया। मौके पर चौकी प्रभारी संतनगर दयाशंकर ओझा व क्षेत्रीय लेखपाल आशाराम भी पहुंच गए। लेखपाल ने तहसील मड़िहान में क्षतिपूर्ति की रिपोर्ट दे दिया। वही पीड़ित संग परिवार के लोगों को रहने के लिए ठिकाना नहीं बचा है।

बतौर कप्तान मिताली राज ने वुमेंस वनडे क्रिकेट में बनाया शानदार रिकार्ड, लेकिन टीम इंडिया को मिली हार

नई दिल्ली । इंडियन वुमेंस टीम की कप्तान मिताली राज ने न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे वनडे मैच में बड़ा रिकार्ड अपने नाम किया। इस में उन्होंने अपने वनडे करियर आस्ट्रेलिया की मेग लैनिंग ने बतौर कप्तान 66 वनडे मैचों में 56.9 की औसत से 3016 रन बनाए हैं। मिताली अबतक 222 वनडे मैचों में 51.83 की औसत से 7516 रन

का 61वां अर्धशतक जड़ा। उन्होंने 81 गेंदों पर 66 रनों की नाबाद पारी खेली। इस दौरान वह बतौर कप्तान 5000 रन बनाने वाली पहली महिला क्रिकेटर बन गई। उन्होंने कप्तान के तौर अबतक कुल 129 मैचों में 55.9 की औसत से 5030 रन बना लिए हैं। मिताली के बाद दूसरे नंबर पर आस्ट्रेलिया की पूर्व कप्तान बेलिंडा क्लार्क है। बतौर कप्तान उन्होंने 97 वनडे मैचों में 47.1 की औसत से 4150 रन बनाए हैं। इसके अलावा तीसरे नंबर पर इंग्लैंड की चालीट एडवर्ड्स हैं। 107 वनडे मैचों में बतौर कप्तान उन्होंने 38.7 की औसत से 3523 रन बनाए हैं। चौथे नंबर पर न्यूजीलैंड की सूजी बेट्स हैं। बतौर कप्तान उहोंने 72 मैचों में 51.8 की औसत से 3214 रन बनाए हैं। वहीं बना चुकी हैं। वह 7 शतक और 61 अर्धसतक जड़ चुकी हैं। उनका बेस्ट स्कोर नाबाद 125 रन है। बता दें कि न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे वनडे मैच में इंडियन वुमेंस टीम ने टास जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में 6 विकेट पर 270 रन बनाए। मिताली के अलावा रिचा घोष ने 65 रन बनए। वहीं ओपनर सबिभनेनी मेघना ने 49 और यास्तिका भाटिया ने 31 रनों की पारी खेली। जवाब में न्यूजीलैंड की टीम ने अमेलिया केर की शतकीय पारी के बदौलत लक्ष्य को 49 ओवर में हासिल कर लिया। उन्होंने नाबाद 119 रनों की पारी खेली। वहीं मैडी ग्रीन ने 52 रन बनाए। इसके साथ ही कीवी टीम पांच मैचों की सीरीज में 2-0 से आगे हो गए है।

सुरेश रैना क्यों रह गए अनसोल्ड सुनील गावस्कर ने बताया

नई दिल्ली। दिग्गज क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने कहा है कि वह इंडियन प्रीमियर लीग 2022 के मेगा आक्शन में सुरेश रैना के अनसोल्ड रहने से हैरान रह गए। साथ ही उन्होंने बताया लेकिन उन्हें लगा कि रैना को चुना जाना चाहिए था। उन्होंने कहा, 'अमित मिश्रा के लिए इतना हैरानी नहीं हो रही क्योंकि उन्हें पिछले साल शायद ही कोई मैच खेलने को मिला हो। और यह स्पष्ट था

कि लीग में शानदार क्रिकेटर खेलने वाले इस क्रिकेटर को किसी फ्रेंचाइजी ने क्यों नहीं खरीदा। 205 मैच खेलने वाले आइपीएल में अबतक चौथे सबसे अधिक रन बनाने वाले और चेनन्ई सुपरकिंग्स के प्रमुख रन स्कोरर होने के बावजूद दो करोड़ बेस प्राइस वाले रैना के लिए किसी ने बोली नहीं लगाई। इसके बाद एक्सीलरेटेड आक्शन के दौरान उनका नाम नहीं आया। इससे लोग काफी हैरान हुए हैं। इस बीच गावस्कर ने स्पोर्ट्स तक के साथ बातचीत के दौरान कहा कि अमित मिश्रा ने पिछले सीजन में शायद ही कोई मैच खेला था ऐसे में उनका अनसोल्ड होने से हैरानी नहीं हुई, कि उनकी गेंदबाजी में अब वह धार नहीं है और फील्डिंग भी खराब है। एक अच्छा फील्डर होना आज के समय में अनिवार्य है क्योंकि आपको सिंगल्स भी बचाने की जरूरत होती है। तो शायद यही वजह है कि अमित मिश्रा को किसी फ्रेंचाइजी द्वारा नहीं चुना गया। गावस्कर ने आगे कहा, 'रैना के लिए मैं निश्चित रूप से हैरान था। वह बाएं हाथ के बल्लेबाज हैं। आफ स्पिन गेंदबाजी करते हैं और अनुभवी हैं। पिछले सीजन में दुबई की पिचों में बहुत उछाल था। वहां वह थोड़ा डरे हुए लग रहे थे और इसलिए मुझे लगता है कि टीमों को लगा होगा कि भारत में भी तेज गेंदबाज होंगे।

आस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे टी-२० मैच से पहले श्रीलंका को झटका, यह खिलाड़ी हुआ कोरोना संक्रमित

सिडनी। आस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे टी-20 मैच से पहले श्रीलंका की टीम को बड़ा झटका लगा है। स्पिनर वानिंदु हसरंगा कोरोना से संक्रमित हो गए हैं। श्रीलंका क्रिकेट ने मंगलवार को इसकी जानकारी दी। बोर्ड ने ट्वीट करके कहा, 'वानिंदु हसरंगा कोरोना से संक्रमित पाए गए हैं। खिलाड़ी को आज सुबह (15 फरवरी) आयोजित नियमित रैपिड एंटीजन टेस्ट (आरएटी) के दौरान पाजिटिव पाया गया। वह वर्तमान में कोविड -19 प्रोटोकाल से गुजर रहे हैं और उन्हें आइसोलेशन में रखा गया है।' इससे पहले, बोर्ड ने पुष्टि की थी कि कुशाल मेंडिस कोरोना से उबर चुके हैं और वह तीसरे टी-20 के लिए चयन के लिए उपलब्ध होंगे। आस्ट्रेलिया टीम सीरीज में 2-0 की बढ़त हासिल कर चुकी है और अगर आरोन फिंच की अगुवाई वाली टीम तीसरा मैच जीत जाती है, तो वो पांच मैचों की सीरीज में अजेय बढ़त हासिल कर लेगी। गौरतलब है कि हसरंगा को रायल चैलेंजर्स बैंगलोर ने इंडियन प्रीमियर लीग की मेगा आक्शन में 10.75 करोड़ रुपये में खरीदा था। आस्ट्रेलिया ने दूसरे टी-20 मैच में श्रीलंका को रविवार को सुपर ओवर में हरा दिया था। आस्ट्रेलिया पांच मैचों की सीरीज में 2-0 से आगे है। श्रीलंका ने टास जीतकर गेंदबाजी चुनी और आस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में छह विकेट पर 164 रन बनाए। आस्ट्रेलिया की ओर से जोश इंग्लिस ने सर्वाधिक 48 रन बनाए। जवाब

में श्रीलंका की टीम ने पाथुम निसंका के 53 गेंदों पर सात चौकों और दो छक्कों की मदद से 73 रन तथा कप्तान दासुन शनाका के 19 गेंदों पर 34 रन की पारी से आखिरी ओवर में 18 रन जोड़कर स्कोर 20 ओवर में आठ विकेट पर 164 रन तक पहुंचाया। स्कोर बराबर रहने पर मैच के परिणाम के लिए सुपर ओवर का सहारा लिया गया। जोश हेजलवुड ने सुपर ओवर में शानदार गेंदबाजी की और केवल पांच रन दिए। फिर मार्कस स्टोइनिस ने वनिंदु हसरंगा पर लगातार दो चौके जड़कर आस्ट्रेलिया को जीत दिलाई।

नौ साल तक प्लंबर के तौर पर किया काम, अब खेलेंगे रणजी ट्राफी, संघर्ष भरा है प्रशांत राणा का सफर

नई दिल्ली। नौ साल तक प्लंबर के तौर पर काम करके अपना जीवन यापन करने वाले ओडिशा के नयागढ़ के 23 साल के एक युवक ने राज्य की रणजी ट्राफी टीम में जगह बनाई है। दाएं हाथ के तेज गेंदबाज प्रशांत राणा का यहां तक का सफर किसी चमत्कार से कम नहीं है। वह देश के उन कुछ क्रिकेटरों में से एक हैं, जिन्होंने जूनियर क्रिकेट में राज्य का प्रतिनिधित्व किए बिना रणजी टीम में जगह बनाई है

क्रिकेट के प्रति जूनून के कारण नयागढ़ जिले के माधवपुर गांव के मूल निवासी राणा साल 2011 में कटक आए। दसवीं कक्षा पास करने के बाद राणा ने कटक के राजाबागीचा के सिटी कालेज में प्लस घ्ग् में ह्यूमैनिटीज की पढ़ाई करने का फैसला किया और और यूनियन स्पोर्टिंग क्रिकेट क्लब से भी जुड़े। राणा ने अहमदाबाद से कहा कि वे अपने सपने को पूरा करने के लिए कटक आए थे क्योंकि वे हर हाल में क्रिकेट खेलना चाहते थे। उनका परिवार उनकी मदद के लिए हर महीने 2000 रुपये भेजता था, लेकिन चार महीने बाद उनके पिता को टीबी से ग्रस्त होने के बारे में पता चला और पैसा आना बंद हो गया। वह गांव के पुजारी थे। प्रशांत के भाई सब्जी बेचकर अपनी आजीविका चलाते थे। ऐसे में राणा के परिवार वाले उन्हें वापस बुलाने लगे थे। वे चाहते थे कि क्रिकेट के बजाय सेना, बीएसएफ या सीआरपीएफ की नौकरियों के लिए कोशिश करें। लेकिन राणा के मन में कुछ और योजनाएं थीं उन्होंने राजधानी में नौकरी की तलाश शुरू कर दी। ऐसे में उहोंने एक आदमी से संपर्क किया और प्लंबिंग के काम में लग गए। राणा इस काम को करने के लिए साइकिल पर हर दिन लगभग 40 किमी की यात्रा करता थे। उन्हें प्रतिदिन इसके लिए 250 रुपये मिलते थे, लेकिन काम ने उनका पूरा दिन लद जाता था और उनके पास अभ्यास के लिए बहुत कम ऊर्जा बचती थी। तभी उहोंने ठेकेदार से संपर्क और उसे प्रतिदिन केवल 100 रुपये देने लेकिन दोपहर 1 बजे तक जाने देने के लिए कहा, ताकि वह अभ्यास कर सकें।

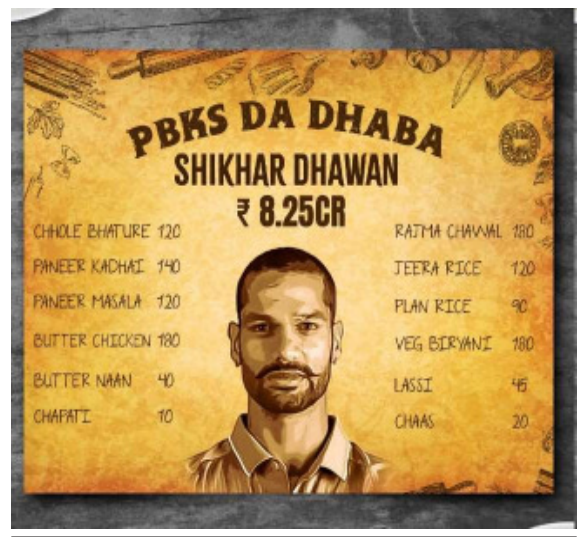

सुरेश रैना को घ्इथ् की नीलामी में किसी ने नहीं खरीदा, णएख् ने भी नहीं लगाई बोली, अब आया ये संदेश

नई दिल्ली । इंडियन प्रीमियर लीग के सफल बल्लेबाजों में से एक सुरेश रैना जिनको मिस्टर आइपीएल जैसे नाम से लोग बुलाते हैं उनको इस बार के मेगा आक्शन

में कोई खरीददार नहीं मिला। 12 और 13 फरवरी 2022 को बैंगलोर में हुए दो दिवसीय आक्शन में सभी 10 टीमें 600 खिलाडियों की बोली लगाने पहुंची। चेनन्ई ने अपने कई पुराने खिलाडियों को साथ जोड़ा लेकिन रैना पर बोली नहीं लगाई। नीलामी में अनसोल्ड रहने के बाद उनके लिए टीम ने एक संदेश जारी किया। आइपीएल के 15वें सीजन के लिए हुए मेगा आक्शन में रैना 2 करोड़ की रकम से साथ शामिल हुए थे। पहले दिन उनको किसी भी टीम ने खरीदने में रूचि नहीं दिखाई। इसके बाद दूसरे दिन आखिर के सेट में उनको फिर से शामिल किया गया। इस बार भी उनको किसी फ्रेंचाइजी टीम ने खरीदने में रूचि नहीं दिखाई। आइपीएल के 15वें सीजन के लिए हुए मेगा आक्शन में रैना 2 करोड़ की रकम से साथ शामिल हुए थे। पहले दिन उनको किसी भी टीम ने खरीदने में रूचि नहीं दिखाई। इसके बाद दूसरे दिन आखिर के सेट में उनको फिर से शामिल किया गया। इस बार भी उनको किसी फ्रेंचाइजी टीम ने दिखाई। साल 2008 के बाद यह महज दूसरा मौका ही होगा जब रैना आइपीएल में नहीं खेलेंगे। साल 2020 में कोरोना की वजह से उन्होंने अपना नाम वापस लिया था। सीएसके ने रैना के मेगा आक्शन में नहीं चुने जाने पर अपना संदेश जारी कर इस धुरंधर को शुभकामनाएं दी। चिनन थाला आपने जो हम सभी को यलो मेमोरी दी उसके लिए आपको सुपर थैंक्स। आइपीएल इतिहास में रैना सबसे ज्यादा रन बनाने वालों कि लिस्ट में चौथे नंबर पर हैं। 205 मैच खेलकर इस खिलाड़ी ने 5528 रन बनाए हैं साथ ही 25 विकेट भी चटकाए हैं। इस दौरान उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर नाबाद 100 रन का रहा। 39 अर्धशतकीय पारी के साथ 5528 रन बनाए। आइपीएल में रैना ने 203 छक्के और 506 चौके जमाए।

इस बड़ी वजह से ईडन गार्डन में खत्म होगी कोहली की 'विराट' पारी की तलाश

कोलकाता। एशियाई क्रिकेट का मक्का कहा जाने वाला कोलकाता का ईडन गार्डन स्टेडियम खराब फार्म से जूझने वाले बल्लेबाजों के लिए हमेशा भाग्यशाली रहा है। इस ग्राउंड ने बहुतों को उसका खोया फार्म लौटाया है और करियर लंबा करने में मदद की है। इनमें देश विदेश के बहुत से बल्लेबाज शामिल

हैं। भारत के मुहम्मद अजहरुद्दीन व वीवीएस लक्ष्मण और पाकिस्तान के यूनुस खान समेत ऐसे कई उदाहरण हैं। अजहरुद्दीन का बल्ला कहीं चले या न चले, ईडन में खूब चलता था। उन्होंने जब भी फार्म खोया तो ईडन आकर ही इसे वापस पाया। ईडन में टेस्ट मैचों में अजहरुद्दीन ने पांच शतक लगाए हैं। वहीं लक्ष्मण को तो ईडन ने ही टेस्ट क्रिकेटर के तौर पर स्थापित किया था। उन्होंने 2001 में इसी ग्राउंड में आस्ट्रेलिया के खिलाफ 281 रनों की नायाब पारी खेली थी। उनके भी यहां पांच टेस्ट शतक हैं। ऐसे में क्या कोहली की 'विराट पारी की तलाश ईडन में खत्म होने वाली है गौर करने वाली बात यह है कि कोहली अपना पिछला अंतरराष्ट्रीय शतक इसी ग्राउंड में लगाकर गए थे। उन्होंने बांग्लादेश के खिलाफ नवंबर, 2019 में हुए देश के पहले डे-नाइट टेस्ट में पिछली बार शतक लगाया था। उसके बाद से शतकों का सूखा जारी है। भारत वेस्टइंडीज के बीच तीन टी-20 मैचों की सीरीज बुधवार से शुरू होने जा रही है, ऐसे में सबकी नजर खराब फार्म से जूझ रहे कोहली पर होगी। यूं तो टी-20 मैचों में शतक लगाना आसान नहीं होता लेकिन जिस मैदान में श्रीलंका के खिलाफ वनडे मैच में अकेले रोहित शर्मा 264 रन बना सकते हैं, वहां यह नामुमकिन नहीं है और सामने विराट जैसा विश्व स्तरीय बल्लेबाज हो तो यह समय की ही बात होगी। टीम इंडिया के बल्लेबाजी कोच विक्रम राठौर ने यह कहकर इस बात को और बल देने की कोशिश की है कि विराट शतक से ज्यादा दूर नहीं हैं। वैसे ईडन अब तक अंतरराष्ट्रीय टी-20 शतक से वंचित रहा है। विराट की बात करें तो वह यहां टेस्ट में दो व वनडे में एक शतक जड़ चुके हैं। ईडन के क्यूरेटर सुजन मुखर्जी कहते हैं कि यहां का विकेट खिलाडियों की प्रतिभा के साथ पूरा न्याय करता है। यह जितना बल्लेबाजों के माकूल है, उतना ही गेंदबाजों के अनुकूल भी है, यानी पूरी तरह मेरिट पर चलता है। किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। यहां बल्लेबाजों को जैसी सफलता मिली है, वैसी गेंदबाजों को भी मिली है। बस आपको अपना नैसर्गिक खेल दिखाना होगा।

वेस्टइंडीज के खिलाफ टी-20 सीरीज के लिए रिषभ पंत को मिली बड़ी जिम्मेदारी

नई दिल्ली । वेस्टइंडीज के खिलाफ आगामी टी-20 सीरीज के लिए युवा विकेटकीपर बल्लेबाज रिषभ पंत को उप कप्तान बनाया है। बीसीसीआइ ने यह जानकारी

दी है। केएल राहुल के चोट की वजह से सीरीज से बाहर होने के बाद पंत को यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। राहुल वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे वनडे मैच में फील्डिंग के दौरान मांसपेशियों में खिंचाव आने के कारण टी-20 सीरीज से बाहर हो गए थे। टीम में राहुल की जगह रितुराज गायकवाड़ को चुना गया है। यह पहली बार होगा जब पंत को भारतीय टीम के नेतृत्व समूह में शामिल किया गया है। वह रोहित शर्मा, केएल राहुल और जसप्रीत बुमराह के साथ भारत के नए टेस्ट कप्तान के तौर पर विराट कोहली के उत्तराधिकारी बनने की दौड़ में हैं। इस बीच, वाशिंगटन सुंदर हैमस्ट्रिंग में खिंचाव के कारण टी-20 सीरीज बाहर हो गए हैं और उनकी जगह कुलदीप यादव को टीम में शामिल किया गया है। इससे पहले हाल ही में कोरोना से उबरने के बाद रीहैब के अंतिम चरण को फिर से शुरू करने के बाद अक्षर पटेल सीरीज से बाहर हो गए थे। तीनों आगे के प्रबंधन के लिए बेंगलुरु में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में होंगे। अखिल भारतीय वरिष्ठ चयन समिति ने राहुल और अक्षर की जगह रुतुराज गायकवाड़ और दीपक हुड्डा को टीम में शामिल किया। कीरोन पोलार्ड की अगुवाई वाली टीम को टीम इंडिया ने 3-0 से वनडे सीरीज हरा दिया था। अब 16 फरवरी से टी-20 सीरीज खेली जाएगी। सीरीज के तीनों मैच कोलकाता के ईडन गार्डन में बंद दरवाजों के पीछे खेले जाएंगे। रोहित शर्मा (कप्तान), ईशान किशन, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, सूर्य कुमार यादव, रिषभ पंत (उपकप्तान) (विकेट-कीपर), वेंकटेश अय्यर, दीपक चाहर, शार्दुल ठाकुर, रवि बिशनेई, युजवेंद्रा चहल , मो. सिराज, भुवनेश्वर कुमार, आवेश खान, हर्षल पटेल, रुतुराज गायकवाड़, दीपक हुड्डा और कुलदीप यादव।

टी20 सीरीज से पहले यह भारतीय आलराउंडर टीम से हुआ बाहर, कुलदीप यादव को मिली जगह

नई दिल्ली । वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे सीरीज जीतने के बाद भारतीय क्रिकेट टीम 16 फरवरी से शुरू होने वाले तीन मैचों की टी20 सीरीज के लिए पूरी तरह से

तैयार है, लेकिन इससे पहले भारतीय क्रिकेट टीम के लिए लगातार बुरी खबर सामने आ रही है। केएल राहुल और अक्षर पटेल इस टी20 सीरीज से पहले ही बाहर हो चुके हैं और अब वाशिंगटन सुंदर भी इंजरी की वजह से टीम से बाहर हो गए हैं। वाशिंगटन सुंदर को ग्रेड वन की हैमस्ट्रिंग इंजरी हुई है और इसकी वजह से वो अब टी20 सीरीज नहीं खेल पाएंगे। चयनकर्ताओं ने कुलदीप यादव को उनकी जगह पर टी20 टीम में शामिल किया है। वाशिंगटन सुंदर इंजर्ड होने के बाद तीन सप्ताह तक नेशनल क्रिकेट अकेडमी में रहेंगे और अपनी फिटनेस पर ध्यान देंगे। वाशिंगटन सुंदर इससे पहले भी इंजरी की वजह से लंबे समय तक टीम इंडिया से बाहर रहे थे और उन्हें वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज के लिए टीम इंडिया में जगह मिली थी। उन्होंने वेस्टइंडीज के खिलाफ तीनों वनडे मुकाबले खेले थे और उनका प्रदर्शन भी अच्छा रहा था। सुंदर एक शानदार स्पिनर तो हैं ही साथ ही साथ वो निचले क्रम पर एक बेहद उपयोगी बल्लेबाज भी हैं। आपको बता दें कि वाशिंगटन सुंदर ने इस महीने की शुरुआत में 11 महीने बाद वेस्टइंडीज के खिलाफ एकदिवसीय श्रृंखला में भारतीय टीम में वापसी की थी। वो 2021 में भारत के इंग्लैंड दौरे के दौरान उंगली की चोट के कारण इस दौरे से बाहर हो गए थे। इसके बाद वो साल 2021 में यूएई में आयोजित हाफ आइपीएल में भी नहीं खेल पाए तो वहीं इसके बाद टी20 वर्ल्ड कप 2021 में भी हिस्सा नहीं ले पाए थे। वहीं साउथ अफ्रीका दौरे से पहले वो कोविड पाजिटिव पाए गए थे और इस दौरे पर भी नहीं जा सके थे।

राशिफल

मेष-: आज का दिन मौज-मस्ती और आनंद से भरा रहेगा- जीवन को भरपूर जियेंगे. आप दूसरों पर थोड़ा अधिक खर्च कर सकते हैं।

वृष-: आज आपकी मनोकामना पूर्ति के प्रयास प्रभावी रहेंगे। सामान्य तौर पर आज आपको किसी बात का बुरा नहीं लगेगा।

मिथुन-: आज आसपास के लोगों का सहयोग मिलेगा. लोग आपसे अपने मन की बात कहने के लिए अधिक उत्सुक होंगे।

कर्क-: आपकी व्यक्तिगत समस्याएं मानसिक शांति भंग कर सकती हैं. मानसिक दबाव से बचने के लिए कुछ रोचक और अच्छा पढ़ें।

सिंह-: आज का दिन शानदार रहने वाला है। खुश रहो क्योंकि अच्छा समय आ गया है। कोई नया विचार आपको आर्थिक लाभ देगा।

कन्या-: आज आपका रहन-सहन और रहन-सहन लोगों को प्रभावित करेगा. बच्चों की जरूरतों को पूरा करने में लगे रहेंगे। पारिवारिक जीवन अच्छा रहेगा।

तुला-: थोड़ा आराम करें और काम के बीच में जितना हो सके आराम करते रहें. आज अपने ख़र्चों पर नियंत्रण रखें और खुले हाथों से ख़र्च करने से बचें।

वृश्चिक-: आज भाग्य आपका साथ देने वाला है। कार्यक्षेत्र में आज कुछ नया करने की कोशिश करें। काम धीरे-धीरे होगा लेकिन पूरा जरूर होगा।

धनु-: आज परिवार के लोगों से अनबन के मामले हो सकते हैं. आज का दिन आपके लिए शानदार रहने वाला है। शिक्षा और नौकरी के क्षेत्र में आपको सफलता मिलेगी।

मकर-: आपकी मेहनत और परिवार का सहयोग वांछित परिणाम देने में सफल रहेगा. लेकिन प्रगति की गति को बनाए रखने के लिए इसी तरह मेहनत करते रहें।

कुंभ-: आज आपको किसी खास काम के चलते यात्रा पर जाना पड़ सकता है. किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से मुलाकात के योग बन रहे हैं। कोई महत्वपूर्ण सुझाव आपको मिलेगा।

मीन-: मीन राशि के लोगों को आज के दिन सोच-समझकर किसी बड़े फैसले को अंतिम रूप देना चाहिए. आपका निर्णायक फैसला बहुत फायदेमंद रहेगा।

सम्पादकीय

जानिये क्या है विशेषता वाराणसी के निकट नवनिर्मित विहंगम योग के केंद्र स्वर्वेद महामंदिर की

काशी प्राचीन काल से ही भारतीय धर्म और संस्कृति का केंद्र रही है। आज भी दुनिया भर के लोग यहां काशी विश्वनाथ का दर्शन करने और गंगा तट के घाट के साथ बौद्ध केंद्र सारनाथ को देखने आते हैं। लेकिन लगभग यहां 18 वर्षो से बन रहे स्वर्वेद महामंदिर के प्रांगण में विहंगम योग संत समाज के वार्षिक उत्सव के अवसर पर बीते दिनों जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पहुंचे तो उसके बाद यह केंद्र भी दुनिया भर में विख्यात हो गया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस अवसर पर कहा था, 'इस दैवीय भूमि पर ईश्वर अपनी अनेक इच्छाओं की पूर्ति के लिए संतों को निमित्त बनाता है। सद्गुरु सदाफल जी महाराज ने समाज के जागरण के लिए विहंगम योग को जन-जन तक पहुंचाने के लिए यज्ञ किया था। आज वह संकल्प एक विशाल वट वृक्ष बन गया है। आज 5,101 यज्ञ कुंडों के वैदिक यज्ञ, इतने बड़े सह योगासन प्रशिक्षण शिविर, इतने सेवा प्रकल्पों एवं लाखों साधकों के परिवार के रूप में हम उस संत के संकल्प की सिद्धि को अनुभव करते हैं। सद्गुरु सदाफल जी को नमन करते हुए उन्होंने इस परंपरा को जीवंत बनाए रखने और विस्तार देने के लिए सद्गुरु आचार्य श्री स्वतंत्र देव जी महाराज एवं संत प्रवर श्री विज्ञान देव जी महाराज के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि आज एक भव्य आध्यात्मिक भूमि का निर्माण हो रहा है। जब यह पूर्ण हो जाएगा, तो काशी सहित पूरे देश के लिए एक उपहार होगा।

यह मंदिर शिल्प और अत्याधुनिक तकनीक के अद्भुत सामंजस्य का प्रतीक है। इस भव्य मंदिर की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यहां पर किसी भी भगवान की पूजा नहीं की जाती, बल्कि केवल मेडिटेशन किया जाता है। यह मंदिर अपनी भव्यता के कारण पूरे देश में काफी प्रसिद्ध हो गया है। यह महामंदिर इतना बड़ा है कि इसमें एक साथ 20 हजार से ज्यादा लोग बैठकर ध्यान लगा सकते हैं। इसलिए इसे विश्व का सबसे बड़ा मेडिटेशन सेंटर भी कहा जाता है। इस मंदिर का नाम दो शब्दों से मिलकर बना हुआ है। इसमें स्व का एक अर्थ है आत्मा और वेद का अर्थ है ज्ञान। यानी जिसके द्वारा आत्मा का ज्ञान प्राप्त किया जाता है, उसे स्वर्वेद कहते हैं।

वाराणसी और आसपास के क्षेत्रों को पुराणों में धर्म-क्षेत्र भी कहा गया है। आज जहां 'स्वर्वेद महामंदिरऽ बन रहा है, उसके समीप ही कैथी गांव के पास गंगा गोमती का संगम है। कहा जाता है कि यह संपूर्ण क्षेत्र महर्षि उद्दालक की तपोभूमि रही है। यह भूमि नचिकेता की भी जिज्ञासा भूमि है, जहां कठोपनिषद में यमाचार्य द्वारा उन्हें ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया गया है। इस तरह काशी और इसके आसपास के क्षेत्र में अनेक ऋषि, महर्षि और संत-महात्मा हुए हैं जो पूरे देश में पूज्य माने गए हैं। इस तरह काशी को भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक राजधानी भी कहा जाता है।

क्या है विहंगम योग : विहंगम योग भारतीय ऋषियों की प्राचीनतम योग विद्या है जिसे सद्गुरु सदाफल देव महाराज ने अपनी 17वर्षो की साधना द्वारा जनसामान्य के लिए सुलभ कराया है। वर्ष 1924 में उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में स्थित वृत्तिकूट आश्रम से आरंभ हुआ विहंगम योग संस्थान आज लाखों परिवारों का जीवन संवार चुका है। यह संस्थान समाज के कल्याण के लिए अन्य कई कार्यक्रमों का भी संचालन कर रहा है। सद्गुरु सदाफल देव महाराज रचित 'स्वर्वेदऽ के अनुसार, 'परब्रह्म प्रकृति के पार है और कर्मकांड के सर्वसाधन प्रकृति के अंतर्गत है। प्रकृति के पार साधन वेद में एकमात्र विंहगम योग है। उसी विहंगम योगाभ्यास द्वारा परब्रह्म की प्राप्ति एवं परमानंद की उपलब्धि होती है, अन्य मार्ग से नहीं। भाव यह है कि ब्रह्म प्रकृति के पार चेतन है और विहंगम योग प्रकृति के पार चेतन के विकास से होता है। अतः परमात्मा से मिलने का सत्य मार्ग विहंगम योग है। स्वर्वेद महामंदिर की दीवारों पर लिखे गए दोहों के बारे में कहा गया है कि इसके दिव्य दोहों के श्रवण मात्र से ही हमारे शुभ संस्कारों का उदय होने लगता है, विवेक जागृत रहता है और साधना के अभ्यास में हमारा मन स्थिर होने लगता है।

यूजीसी की ओर से की जा रही उच्च शिक्षा को रोजगार से जोड की कवायद

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने सनतक और सनतकोत्तर पाठ्यक्रमों को रोजगारपरक बनाने के उद्देश्य के साथ राष्ट्रीय कौशल अर्हता फ्रेमवर्क में बदलाव से जुड़ा एक प्रारूप तैयार किया है। प्रस्तावित प्रारूप का उद्देश्य देश में व्यावसायिक शिक्षा और औपचारिक शिक्षा के बीच एकरूपता लाना एवं कौशल शिक्षा का व्यवस्थित ढांचा तैयार करना है। देश के सामने कौशल विकास की बड़ी चुनौती है। ऐसे में कौशल प्रशिक्षण एवं रोजगारपरक शिक्षा की दिशा में यूजीसी की इस पहल के प्रभाव दूरगामी साबित हो सकते है राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में कौशल शिक्षा पर खास ध्यान दिया गया है। इसी क्रम में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की ओर से उच्च शिक्षा से जुड़े सभी पाठ्यक्रमों को इस प्रकार से डिजाइन किया जा रहा है जिससे वह उच्च शिक्षा को कौशल तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण और इंडस्ट्री इंटरफेस के साथ एकीकृत कर सके। यूजीसी द्वारा राष्ट्रीय उच्च शिक्षा अर्हता ढांचा (एनएचईक्यूएफ) के मसौदे में युवाओं को कौशल प्रशिक्षण एवं रोजगारपरक शिक्षा देने के लिए उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों को कौशल व व्यावसायिक शिक्षा के साथ जोड़ दिया है। इनमें औपचारिक डिग्री के साथ-साथ कौशल का प्रशिक्षण भी मिलेगा। यह उसी पाठ्यक्रम या क्षेत्र से संबंधित होगा, जिसमें छात्र-छात्राएं पढ़ाई कर रहे हैं। खास बात है कि इनमें डिग्री, डिप्लोमा और सर्टिफिकेट जैसे सभी स्तर के पाठ्यक्रम शामिल होंगे और छात्रों को डिग्री के साथ-साथ संबंधित विषयों में तकनीकी रूप से दक्ष भी किया जाएगा। उम्मीद की जा रही है कि नए शैक्षणिक सत्र यानी वर्ष 2022-23 से ही इन मानकों के अनुरूप सनतक से लेकर सनतकोत्तर स्तर के सभी पाठ्यक्रमों की पढ़ाई शुरू कर दी जाएगी। आखिर ऐसा करने की आवश्यकता क्यों महसूस की जा रही है। देश में चल रही औपचारिक शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा में एकरूपता नहीं है, न ही कौशल विकास का कोई व्यवस्थित ढांचा है। इसलिए अब यूजीसी द्वारा व्यवस्थित ढांचा तैयार करने और एकरूपता लाने के उद्देश्य से उच्च शिक्षा अर्हता ढांचा का प्रारूप तैयार किया है। इसका उद्देश्य शिक्षा के बाद रोजगार की समस्या को दूर करने के साथ-साथ उद्योगों को उनकी जरूरत के मुताबिक मानव संसाधन उपलब्ध करवाना भी है। जो युवा हुनरमंद और योग्य होंगे, उन्हें रोजगार मिलेगा और उद्योगों को उनकी जरूरतों के अनुसार कर्मचारी मिलेंगे। यह एक तरह से दोनों के मध्य सेतु का काम करेगा और दोनों के लिए लाभदायक होगा। प्रख्यात उद्यमी रतन टाटा ने कुछ समय पहले कहा था कि इंजीनियरिंग की पढ़ाई करके निकल रहे युवा उद्योग की जरूरतों के मुताबिक नहीं पाए जा रहे है। उद्योग जगत इस तरह की अक्सर शिकायत करता रहा है कि उसे जैसे युवा चाहिए, वैसे उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं। आंकड़े बताते हैं कि हमारे देश में युवा और कार्यशील आबादी की हिस्सेदारी लगातार बढ़ रही है। लगभग 35 प्रतिशत भारतीय 15 से 34 वर्ष के यानी सबसे अधिक उत्पादक उम्र के है। यह हमारे देश का एक सकारात्मक पहलू है। लेकिन व्यावसायिक शिक्षा में सुधार किए बगैर देश अपने जनसांख्यिकीय लाभांश का समुचित दोहन नहीं कर सकता है। अतः इस जनसंख्या का लाभांश प्राप्त करने के लिए हमें युवा पीढ़ी की उत्पादकता का ज्यादा से ज्यादा सदुपयोग करने के मार्ग तलाशने होंगे। दुनिया में सर्वाधिक कार्यशील आबादी का पूरा लाभ तभी संभव है जब हर हाथ हुनर और हर दिमाग कौशल युक्त हो। युवा इनोवेटर : यूनाइटेड नेशंस पापुलेशन फंड्स (यूएनएफपीए) ने अपनी -1.8 अरब नौजवानों की ताकत- नामक रिपोर्ट जारी करते हुए कहा था कि युवा इनोवेटर, बिल्डर और लीडर होते हैं, लेकिन ऐसा वे तभी कर सकते हैं, जब उनके पास कौशल, अवसर, स्वास्थ्य व निर्णय लेने की क्षमता हो। अच्छी बात है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस चिंता को ध्यान में रखते हुए कौशल विकास के लिए उच्च शिक्षा अर्हता ढांचा (एनएचईक्यूएफ) का मसौदा तैयार किया है। वैश्विक मांग : भारत जैसे युवा देश में कुशल मानव कार्यबल की अत्यधिक कमी है। नेशनल सैंपल सर्वे (एनएसएसओ) के मुताबिक देशभर में केवल 3.5 प्रतिशत युवा ही हुनरमंद हैं। जबकि चीन में 45 प्रतिशत, अमेरिका में 56 प्रतिशत, जर्मनी में 74 प्रतिशत, जापान में 80 प्रतिशत और दक्षिण कोरिया में 96 प्रतिशत लोग हुनरमंद हैं। वर्तमान में भारत में कौशल प्रशिक्षण के कई पाठ्यक्रम उद्योगों के अनुरूप नहीं है या फिर कौशल प्राप्त होने का केवल प्रमाणपत्र ही है, वास्तविक कौशल नहीं है। यही कारण है कि इन लोगों को जल्द नौकरी नहीं मिल पाती है। महामारी जनित कारणों से उद्योग के संचालन के स्वरूप में भी परिवर्तन आया है, जिससे जरूरी कौशल और कौशल पाठ्यक्रम के बीच की खाई और चौड़ी होने की आशंका है। ऐसे में कोरोना महामारी के बाद बड़ी

चुनौती बदली परिस्थितियों में हमारे नौजवानों को औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों की जरूरतों के हिसाब से ढालने की होगी। जरूरतों से सामंजस्य : देशभर में फैले दस हजार से अधिक औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आइटीआइ) का नेटवर्क कौशल भारत अभियान की रीढ़ है। इनमें से 80 प्रतिशत से भी अधिक संस्थान निजी हैं। समस्या यह है कि इन प्रशिक्षण संस्थानों से निकलने वाले युवा अक्सर अर्थव्यवस्था की बदलती जरूरतों से सामंजस्य नहीं बिठा पा रहे हैं। सरकारी आइटीआइ संस्थानों के पास अच्छी-खासी इमारतें एवं भूमि हैं, लेकिन गुणवत्तापरक प्रयोगशालाओं एवं उपकरणों का स्तर औसत ही है। आधुनिक टेकनेलाजी और विशेषकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते चलन के कारण कामकाज की प्रकृति भी बदल रही है। इस वजह से परंपरागत नौकरियां तेजी से कम होती जा रही है। जाहिर है कि शिक्षा संस्थानों के साथ कौशल विकास संस्थानों को वैसे युवा तैयार करने पर गंभीरता से ध्यान देना होगा, जो तेजी से बदलते उद्योग जगत की आवश्यकता को पूरा कर सकें। आने वाले समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अधिक महत्व होगा और नौकरियों की प्रकृति में बड़ा बदलाव होगा, क्योंकि लोगों की जीवनशैली में भी व्यापक बदलाव आएगा। ऐसे में शैक्षिक पाठ्यक्रम को उन परिवर्तनों के अनुकूल बनाने के लिए डिजाइन किया जाना चाहिए, जिनकी जरूरत पड वाली है और शिक्षकों का चयन और उनका प्रशिक्षण भी उसी के अनुसार होना चाहिए। कामकाजी आबादी की मांग दुनिया के ज्यादातर विकसित देशों में कामकाजी आबादी कम हो रही है। इस कारण से इन देशों में भारत के कौशल प्रशिक्षित युवाओं की मांग बढ़ रही है। ऐसे में जरूरी है कि भारत डिग्री के साथ टेकनेकल स्किल्स एवं प्रोफेशनल स्किल्स से दक्ष प्रतिभाओं का निर्माण करने पर फोकस करे। गौरतलब है कि दुनिया के एक लब्ध प्रतिष्ठित मानव संसाधन परामर्श संगठन कार्न फेरी की एक रिपोर्ट के मुताबिक, जहां विश्व में वर्ष 2030 तक कुशल कामगारों का बड़ा संकट खड़ा होगा, वहीं हम कौशल विकास की दिशा में प्रभावी कदम उठाएं तो भारत के पास 24.5 करोड़ अतिरिक्त कुशल श्रमबल हो सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 2030 तक दुनिया के 19 विकसित और विकासशील देशों में 8.52 करोड़ कुशल श्रमशक्ति की कमी होगी। वहीं, भारत इकलौता देश होगा जिसके पास अतिरिक्त कुशल कामगार उपलब्ध हो सकेंगे। भारत ऐसे में विश्व के तमाम देशों में कुशल कामगारों को भेजकर इसका फायदा उठा सकता है। ऐसे में कौशल विकास की दिशा में मिशन की तरह काम करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों को प्रतिभा का एक ऐसा साझा प्लेटफार्म बनाने की जरूरत है, जहां ऐसे स्किल कोर्स शुरू किए जाएं, जिनकी विदेश में जरूरत है। इस कमी को पूरा करने के लिए हमारे तकनीकी संस्थानों और विश्वविद्यालयों को विदेशी संस्थानों व वहां की नियोक्ता कंपनियों के साथ तालमेल बैठाना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि केंद्र सरकार कौशल विकास के उनन्यन पर निरंतर ध्यान दे रही है। भारत की शिक्षा व्यवस्था को डिग्रियों के जाल से निकालकर कौशल पर आधारित करने के लिए अटल इनोवेशन शुरू किया गया है। सरकार 40 करोड़ युवाओं को हुनरमंद बनाने के लिए स्किल इंडिया कार्यक्रम चला रही है। यहां महत्वपूर्ण सवाल यह है कि स्किल इंडिया कार्यक्रम को कैसे सफल बनाया जाए देश में कौशल विकास के लिहाज से दो चीजें महत्वपूर्ण हैं। एक तो यह कि नियोक्ता की अपेक्षा के मुताबिक कौशल पर्याप्त हो और दूसरा कर्मचारियों (युवा और वृद्ध) को एक सम्मानित आजीविका कमाने लायक बनाना। भारत को जर्मनी, जापान, चीन, सिंगापुर और ब्राजील के तकनीकी और व्यावसायिक प्रशिक्षण/ शिक्षा माडल से सीखने की भी जरूरत है, जिनके पास अतीत में इसी तरह की चुनौतियां थीं। साथ ही एक व्यापक माडल को अपनाने के लिए अपने स्वयं के अनुभवों से सीखने की आवश्यकता है। यूजीसी के नए अध्यक्ष के समक्ष चुनौतियां ज्ञ पूरे देश के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में गुणवत्ता युक्त शिक्षा देने के लिए प्रयासरत अपेक्स थिंक टैंक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) का नया अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के कुलपति रहे जगदीश कुमार को नियुक्त किया गया है। पदभार संभालते ही अध्यक्ष ने छात्रों के हित में देशभर के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों को फिर से खोले जाने को लेकर जरूरी नोटिस जारी किया है। ऐसे में जाहिर सी बात है कि नए अध्यक्ष के समक्ष पहली चुनौती महामारी के कारण विश्वविद्यालयों में बंद पड़ी शिक्षण गतिविधियों को जरूरी प्रोटोकाल के साथ फिर से सुचारु रूप से शुरू करने की होगी। उच्च शिक्षण संस्थानों की परीक्षाएं जल्दी सम्पन्न हों और परीक्षा परिणाम व दाखिले भी हो जाएं व नया सत्र भी ज्यादा बाधित न हो। दूसरी चुनौती नई शिक्षा नीति को लागू करने में आ रही अड़चनों को दूर करने की होगी। गौरतलब है कि नई शिक्षा नीति में सनतक पाठ्यक्रम में मल्टीपल एंट्री एंड एक्जिट व्यवस्था को अपनाने की है। इसके तहत तीन या चार वर्ष के सनतक कार्यक्रम में छात्र कई स्तरों पर पाठ्यक्रम को छोड़ सकेंगे और उन्हें उसी के अनुरूप डिग्री या प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाएगा (एक वर्ष के बाद प्रमाण पत्र, दो वर्षों के बाद एडवांस डिप्लोमा, तीन वर्षों के बाद सनतक की डिग्री तथा चार वर्षों के बाद शोध के साथ सनतक)। तीसरी चुनौती विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की रिक्तियों को जल्द से जल्द भरने की होगी। देश के 45 केंद्रीय विश्वविद्यालयों में करीब 20 हजार शैक्षणिक व गैर-शैक्षणिक पद रिक्त पड़े है। इन पर नियुक्ति नहीं होने से शैक्षणिक के साथ-साथ एकेडमिक कार्य प्रभावित हो रहे हैं। समय पर नियुक्ति नहीं होने से केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थिति भी खराब होती जा रही है। केंद्र सरकार के डाटा के अनुसार एक अप्रैल 2021 तक देशभर के केंद्रीय विश्वविद्यालयों में 18,911 शिक्षकों के पदों के विरुद्ध 12,775 शिक्षक ही कार्यरत हैं, यानी 6136 शैक्षणिक पद रिक्त पड़े हैं। पिछले कुछ वर्षो में यूजीसी का कार्य क्षेत्र बहुत बढ़ गया है। नए अध्यक्ष के समक्ष एक चुनौती उच्च शिक्षण संस्थानों में अनुसंधान और नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को सक्षम करने और उच्च शिक्षा को प्रौद्योगिकी का उपयोग करके अधिक समावेशी और सुलभ बनाने की भी होगी।

हमें और खासकर मुस्लिम समाज को यह सवाल पूछना होगा कि हिजाब जरूरी है या पढ़ाई

हमें और खासकर मुस्लिम समाज को यह सवाल पूछना होगा कि हिजाब जरूरी है या पढ़ाई ऐसे सवाल ही हमें यह समझने में मदद करेंगे कि कर्नाटक का मामला असल में मुस्लिम महिलाओं के हक का नहीं, बल्कि उसकी आड़ में उन्हें पर्दे में रखने और अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने का है। बेहतर हो कि आज हम महात्मा गांधी के इस कथन का स्मरण करें कि 'मुस्लिम महिलाओं को पर्दे की गुलामी से

बचाना चाहिए। अगर आधी आबादी एक खराब प्रथा की वजह से से पंगु बनी रहती है तो हम कभी भी स्वतंत्र और महान होने की आकांक्षा कैसे कर सकते हैं (माई डेज विद गांधी-निर्मल कुमार घोष, पृष्ठ संख्या 140) कर्नाटक के उडुपी जिले में उपजे हिजाब विवाद ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय चर्चा का रूप ले लिया है। इसके पक्ष विपक्ष में कई तरह के तर्क रखे जा रहे हैं। हिजाब की पैरवी करने वालों की ओर से यहां तक कहा जा रहा है कि हिजाब-बुर्का आदि पहनना मुस्लिम महिलाओं का मौलिक अधिकार है और विद्यालयों में स्कूली यूनिफार्म पहनने को कहना मुस्लिम महिलाओं पर अत्याचार है। एक पार्टी ने तो यह नारा देकर हद ही कर दी कि-हिजाब नहीं तो पढ़ाई नहीं। महाराष्ट्र में ऐसे पोस्टर नजर आए, जिनमें लिखा था, पहले हिजाब-फिर किताब। इस सारे विवाद में हम भूल गए कि इसके मूल में क्या है महिलाओं को अपनी पहचान छिपानी चाहिए और इसके लिए हिजाब-बुर्का पहनना चाहिए इस तरह का सोच आखिर किस प्रकार से महिलाओं के हित में है वास्तव में इस महत्वपूर्ण प्रशन पर गहन विचार होना चाहिए था, लेकिन हमारे लिबरल तबके ने अपनी विचारधारा को धता बताकर हिजाब को पसंद के अधिकार से जोड़ दिया। उन्होंने ऐसा करते समय इस पर भी ध्यान नहीं दिया कि हिजाब को च्वाइस का मसला बनाकर वे अपनी ही विचारधारा के उलट जाकर मुस्लिम समाज को गुमराह कर रहे हैं। जिस परिधान यानी हिजब बुर्के के पीछे पितृसत्तात्मक मानसिकता काम कर रही है, उसे महिलाओं के अधिकारों के रूप में प्रचारित करने से दुर्भाग्यपूर्ण और कुछ नहीं हो सकता। बात केवल इस दुर्भाग्यपूर्ण चिंतन की ही नहीं है। हम यह भी देख रहे हैं कि यह अफवाह फैलाई जा रही है कि भारत में हिजाब-बुर्के पर पाबंदी लगाने की कोशिश की जा रही है। यह दुष्प्रचार कुछ बाहरी ताकतों की ओर से भी किया जा रहा है, जबकि सच्चाई यह है कि केवल इतना कहा जा रहा है कि स्कूल का जो ड्रेस कोड है, वह सभी छात्र-छात्राओं पर लागू होता है और उसका पालन सभी को करना चाहिए। अगर कर्नाटक की छात्राओं के लिए हिजाब इतना ही जरूरी है तो जब 2019 में केरल मुस्लिम एजुकेशन सोसायटी ने अपने करीब डेढ़ सौ शिक्षा संस्थानों में बुर्के को प्रतिबंधित किया, तब वहां यह मुद्दा क्यों नहीं बना था जाहिर है कि इसीलिए कि वहां इस तरह का नैरेटिव काम नहीं आता कि मुस्लिम समाज पर जुल्म हो रहा है। हमें और खासकर मुस्लिम समाज को हिजाब-बुर्के के मामले में सवाल पूछने ही होंग ये सवाल ही हमें यह समझने में मदद करेंगे कि दरअसल मामला मुस्लिम महिलाओं के हक का नहीं, बल्कि उसकी आड़ में उन्हें पर्दे में रखने और अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने का है। मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि जो लोग महिला अधिकार की बातें करते हैं और इन दिनों कुछ ज्यादा ही कर रहे हैं, क्या उन्हें वास्तव में मुस्लिम लड़कियों और महिलाओं के हितों की चिंता है यह याद रखना चाहिए कि हिंदुस्तानी मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई को सबसे बड़ा धक्का उस दिन लगा था, जिस दिन शाहबानो प्रकरण में आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के दबाव में राजीव गांधी सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पलट दिया था। मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड कोई सरकारा संवैधानिक संगठन नहीं, बल्कि महज एक गैर सरकारी संगठन है। शाहबानो मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले को जिस तरह पलटा गया उससे मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई कमजोर पड़ी और शायद इसी कारण तीन तलाक की कुरीति से छुटकारा पाने में 70 साल से अधिक का समय लग गया। इस कुरीति को खत्म करने के बाद भी मुस्लिम महिलाओं को अभी भी अन्य समुदाओं की महिलाओं जैसे कानूनी अधिकार नहीं मिले है। इस समुदाय में सामाजिक बदलाव भी अभी दूर की बात हैं। हिंदू कोड बिल के जरिये तमाम सुधारों से हमारी हिंदू बहनों के अधिकारों की रक्षा हुई। जहां अन्य समुदायों में सामाजिक सुधारों का सिलसिला कायम है, वहीं मुस्लिम समाज का नेतृत्व धार्मिक स्वतंत्रता की आड़ में अपनी महिलाओं के अधिकारों का हनन करने में लगा हुआ है। बहु विवाह, हलाला जैसी अमानवीय प्रथाएं जारी हैं। इसी तरह अन्य अनेक कुरीतियों और महिला विरोधी पुरानी पंरपराओं से भी मुस्लिम महिलाएं जकड़ी हुई है।

महामारी के रूप में उभरता बुजुगी का एकाकीपन, एक पहल हो परिवार को बचाने की

हाल में एक बुजुर्ग ने वरिष्ठ नागरिकों को भरण पोषण और संरक्षण देने के लिए लाए गए कानून के तहत साथ रह रही अपनी बहू पर प्रताडित करने का आरोप लगाते हुए उसे अपने घर से बाहर निकालने की मांग की। स्थानीय प्रशासन ने अर्जी पर संज्ञान लेते हुए बहू को घर खाली करने का आदेश दिया जिसके खिलाफ बहू पहले हाईकोर्ट गई और फिर सुप्रीम कोर्ट, लेकिन

दोनों ही अदालतों ने उक्त कानून के तहत बहू को घर खाली करने का आदेश दिया। बुजुर्गो की ऐसी उपेक्षा अथवा उनसे बुरा बर्ताव आज पूरी दुनिया के लिए एक समस्या है। हाल में इटली के लोमबाडरे शहर में एक दिल दहलाने वाली घटना सामने आई। यहां एक बुजुर्ग महिला ब्रेटा घर में अकेली रहती थी। पड़ोसियों ने शिकायत की कि उसके घर में झाड़-झंखाड़ उग आए है और वे परेशानी पैदा कर रहे है। पुलिस और अन्य अधिकारी जब वहां झाड़ झंखाड़ हटाने आए तो देखा कि वहां 70 साल की वृद्ध महिला कंकाल के रूप में एक कुर्सी पर बैठी है। जांच से पता चला कि वह काफी पहले ही मर चुकी थी। यह खबर आने के बाद भी वहां उसका कोई रिश्तेदार सामने नहीं आया, जो उस महिला का अंतिम संस्कार भी कर सके। आखिरकार यह काम प्रशासन ने किया। इटली की परिवार मंत्री एलेना बोनेटी ने ब्रेटा की मौत पर शोक प्रकट करते हुए कहा कि कम्युनिटी के रूप में उसे याद करना हमारी जिम्मेदारी है। एक-दूसरे की देखभाल करना, एक दूसरे का ध्यान रखना ही हमें एक परिवार की तरह बनाता है। परिवार जैसी संस्था को जीवित रखने के लिए जरूरी है कि हम एक-दूसरे का ख्याल रखें। कोई भी पीछे न छूट जाए। कोई भी अपने अंतिम समय में अकेला न हो। इस घटना से इटली समेत अन्य देशों में यह बहस छिड़ गई है कि आखिर ऐसा कैसे हुआ कि एक बूढ़ी स्त्री के बारे में किसी को पता ही नहीं चला हालांकि यूरोप और अन्य पश्चिमी देशों का समाज जिस तरह से आत्मकेंद्रित है, उसमें ऐसा होना कोई अजूबा भी नहीं। अफसोस की बात यह है कि भारत में भी कुछ लोग अकेलेपन को बहुत आदर्श की तरह देखने लगे हैं। वे जीवन के हर क्षेत्र में इसी की नकल करने की कोशिश भी करते हैं। तभी तो कुछ साल पहले मुंबई की एक घटना सुर्खियों में आई थी। एक आदमी डेढ़ साल बाद जब अमेरिका से लौटा तो घर में उसे अपनी मां का कंकाल मिला। जब बेटे को मालूम था कि मां घर में अकेली है, तो इस डेढ़ साल में उसने मां की कभी खोज-खबर क्यों नहीं ली आ नहीं सकता था, तो फोन क्यों नहीं कर सका किसी अड़ोसी पड़ोसी से क्यों नहीं पूछ सका या कि यह डर था कि कहीं मां की जिम्मेदारी न उठानी पड़ जाए कहीं उसे साथ न ले जाना पड़े और अपनी जिंदगी में खलल पड़े। कोई रिश्तेदार भी ऐसा न निकला, जिसने उस स्त्री के बारे में जानने की कोशिश की। दुनिया भर में लोग अपने बुढ़ापे में अकेलेपन समेत अन्य कई तरह की समस्याओं से जूझ रहे हैं। जिन बाल-बच्चों के लिए उन्होंने अपनी उम्र, तमाम संसाधन लगा दिए, उन्हें रोजमर्रा की देखभाल तो छोडिए इस बात को पता करने की फुर्सत नहीं कि माता-पिता किस हाल में है ठीक है कि बीमार हैं उन्हें उनके भरोसे ही छोड़ दिया गया है। अक्सर वे बयान तो आप सुनते ही होंगे जिनके तहत कहा जाता है कि बूढ़े अर्थव्यवस्था पर बोझ होते हैं। ऐसे में यदि इन दिनों बहुत से युवक-युवतियों को यह लगता है कि वे घर-परिवार क्यों बसाएं जब अंतः बुढ़ापे में अकेले ही रहना है, तो गलत क्या है जिन बच्चों को पाल पोसकर बड़ा करेंगे, वे तो अपनी अपनी दुनिया में निकल लेंगे। माता पिता को भी उनकी जरूरत है, इस बात की याद शायद ही किसी को रहेगी। इसलिए कम से कम जब तक शरीर में ताकत है, साधन है, संसाधन है, हाथ में पैसा है, तब तक वे बिना किसी जिम्मेदारी के अपना जीवन जिएं। बुढ़ापे में जो होगा सो देखा जाएगा, क्योंकि आने वाले वषो में तो अकेलापन और भी बढ़ना है। परिवारों की टूटन ने मनुष्य को जितना अकेला किया था, तकनीक ने उस अकेलेपन को हजारों गुना बढ़ा दिया है। इसके अलावा इस विचार कि परिवार हमारी सारी मुश्किलों की जड़ होता है, को कुछ निहित स्वार्थो ने बहुत सावधानी से तमाम विमर्शो के नाम पर पाला-पोसा है, क्योंकि अकेला मनुष्य बिना किसी सहारे के तमाम तरह के चंगुलों में फंसने के लिए मजबूर होता है। वह व्यापार की बड़े काम की चीज होता है। उसकी जेब में तरह-तरह के मुनाफाखोरों को सेंध लगाना भी बड़ा आसान होता है। महसूस होता है कि आने वाले दिन भारत में बुजुगी के लिए बहुत सी मुश्किलें लाने वाले है। उनकी औसत आयु बढ़ गई है। आज ही बुजुगी की जनसंख्या दस करोड़ के आसपास बताई जाती है। जो अगले वर्षो में और भी बढ़ने वाली है। इतनी बड़ी जनसंख्या और उनके लिए सरकारी योजनाओं का घोर अभाव। जिन परिवारों का उन्हें सहारा था, वे टूट गए है या टूट रहे हैं। अगर है भी तो जिम्मेदारी कौन उठाए जो बुजुर्ग आर्थिक रूप से ठीक भी हैं, कई बार वे भी भारी विपत्ति में फंसते है, क्योंकि पैसा आपका अस्पताल में इलाज करा सकता है, अस्पताल पहुंचा नहीं सकता। अस्पताल पहुंचाने और देखभाल के लिए तो कोई मनुष्य ही चाहिए।

संक्षिप्त समाचार

गृह मंत्रालय की स्थायी समिति ने महिला जेलों की दशा पर जताई चिंता

नई दिल्ली। संसद के कई सदस्यों ने देश भर की विभिन्न जेलों में बंद महिला कैदियों की स्थिति पर चिंता व्यक्त की है। एक बैठक में मौजूद सूत्रों ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि भाजपा के एक सांसद ने गृह मंत्रालय की स्थायी समिति के संज्ञान में यह बात लाई कि देश की कुल 1,500 जेलों में से केवल 31 जेल महिलाओं के लिए हैं और सभी 15 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में स्थित हैं सूत्रों के अनुसार समिति के ध्यान में लाया गया कि करीब 3,600 महिला कैदियों के साथ इन महिला जेलों की 58 प्रतिशत क्षमता पहले से ही भरी हुई है। देश की कुल 19,000 महिला कैदियों में से 16,000 से अधिक महिलाएं ऐसी जेलों में कैद हैं जहां पुरुष कैदी भी बंद हैं। सूत्रों ने कहा कि गृह मंत्रालय के अधिकारी केंद्रीय गृह सचिव अजय भल्ला के साथ समिति के समक्ष मौजूद रहे। समिति के सदस्य इस तरह की भीड़भाड़ वाली जेलों में महिला कैदियों की सुरक्षा और विशेष रूप से मासिक धर्म की स्वच्छता के बारे में चिंतित हैं। कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य आनंद शर्मा ने गृह समिति की अध्यक्षता की।

सिलीगुड़ी नगर निगम में अलग से प्लानिंग एंड मॉनेटरिंग कमेटी गठित करने का मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने दिया निर्देश

सिलीगुड़ी। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मंगलवार को तृणमूल कांग्रेस के नवनिर्वाचित पार्षदों से मुलाकात की। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से मिलने तृणमूल कांग्रेस के सभी 37 नवनिर्वाचित पार्षद सिलीगुड़ी के निकट कामरांगागुड़ी स्थित राज्य की शाखा सचिवालय उत्तर कन्या में पहुंचे हुए थे। मुख्यमंत्री ने दोपहर 12 बजे उनके बीच आकर पार्षदों से मुलाकात की तथा उनका परिचय पूछी। इस दौरान मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने पार्षदों से कहा कि जनता ने जो उनको जनादेश दिया है, इसके लिए उन्हें जनता के बीच जाकर आम जनता के के लिए काम करना होगा। उन्होंने कहा कि जिस तरह से कोलकाता के राजारहाट अंतरराष्ट्रीय स्तर का सुव्यवस्थित शहर है, उसी तरह से सिलीगुड़ी को सजाना होगा। नगर निगम के भावी मेयर गौतम देव से नगर निगम में अलग से प्लानिंग एंड मॉनिटरिंग कमेटी गठित करना होगा। यदि कोई शिकायत मिलती है, तो साथ ही साथ उनको जानकारी देने का निर्देश दिया। मुख्यमंत्री ने कहा वह खुद नगर निगम के परफॉर्मेंस की मॉनिटरिंग करेंगी। एक बार फिर से उन्होंने कहा कि नगर निगम बोर्ड को सरकार से अपेक्षा कम रखते हुए निगम क्षेत्र के विकास के लिए काम करना होगा।

पुलवामा हमले की बरसी पर नोएडा सेक्टर 63 के लोगों ने दी श्रद्धांजलि

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। पुलवामा हमले की बरसी पर सेक्टर 63 के स्थानीय लोगों ने शहीद सैनिकों को 2 मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी, जम्मू कश्मीर में हुए पुलवामा आतंकी हमले में शहीद हुए 40 जवानों को पूरा देश याद कर रहा है, वैसे तो दुनिया भर में 14 फरवरी के दिन वैलेंटाइन डे मनाते हैं लेकिन भारत के इतिहास में 14 फरवरी का दिन पुलवामा हमले में शहीद हुए जवानों को समर्पित है, श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित मुख्य लोगों में सुरेंद्र शर्मा, गौरव कुमार यादव, सिया, राजेंद्र प्रसाद , अशोक, मेहमान,कृष्ण कुमार ,ललित कुमार, राजा ,विक्रांत, आयुष,इमरान, मुख्य रूप से उपस्थित रहे

पुलवामा हमले में शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धांजलि

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। सेक्टर 82 मे आज शाम शहीदों के नाम पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया ।जिसमें पुलवामा हमले में शहीद हुए सैनिकों को सभी ने नम आँखो से उनके चित्र पर फूल चढा कर श्रद्धांजलि दी । साल 2019 के फरवरी महीने की 14 तारीख ने देश को झकझोर कर रख दिया था। इस दिन हुए आतंकी हमले में सीआरपीएफ के 40 जवान शहीद हो गए थे। जम्मू-श्रीनगर नेशनल हाईवे पर हमलावर ने विस्फोटक भरी कार से सीआरपीएफ काफिले की बस को टक्कर मार दी थी। धमाका इतना भयंकर था कि बस के परखच्चे उड़ गए थे। इसके बाद घात लगाए आतंकियों ने अंधाधुंध फायरिंग भी की थी। हमले की जिम्मेदारी पाकिस्तानी आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद ने ली थी। फिदायीन हमले की आईईडी(इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस) खूंखार आतंकी इस्माइल भाई उर्फ लंबू ने तैयार की थी। इस्माइल आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद (जेइएम) के मुखिया मौलाना मसूद अजहर का करीबी रिश्तेदार है। इस हमले को अंजाम देने में मसूद अहजर की मुख्य साजिश थी। इस्माइल उर्फ लंबू को सुरक्षाबलों ने पुलवामा मुठभेड़ में मार गिराया था। श्रद्धांजलि देने वालो में एन के सोलंकी (अध्यक्ष),विष्णु शर्मा,रवि राघव,अंगद सिंह तोमर,आर पी सिंह,राजेश पाठक,मुवेक्श रावत, प्रकाश सिन्हा,राजीव ,सुभाष शर्मा , संजय शुक्ला (महासचिव आर डब्लूयू ए सेक्टर 71),मनोज कुमार गुप्ता ,लक्षमण सिंह चौहान आदि गणमान्य लोग मौजूद रहे ।

पुलवामा हमले के शहीदों को सेक्टर 82 (पाकेट 12) में लोगों ने दी श्रद्धांजलि

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। पुलवामा हमले की बरसी पर सेक्टर 82 पाकेट 12 के लोगों ने शहीद सैनिकों को 2 मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी, जम्मू कश्मीर में हुए पुलवामा आतंकी हमले में शहीद हुए 40 जवानों को पूरा देश याद कर रहा है। श्रद्धांजलि देने वालो में श्रीमती संतोष सिंह (भाजपा महिला मोर्चा की मंडल अध्यक्ष),सी के शर्मा (महासचिव आर डब्लूयू ए),राजेश महाले ,ज्योति महाले ,पप्पी यादव,विकास तिवारी,चंदन पाण्डेय मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

ओडिशा हाईकोर्ट के तीन नए न्यायाधीश ने ली शपथ, कोरोना संक्रमण के मद्देनजर सीमित संख्या में हुआ समारोह

कटक। ओडिशा हाईकोर्ट के नए न्यायाधीश के तौर पर हाईकोर्ट के वकील वी. नरसिंह, विरजा प्रसन्न शतपथी और एम.एस रमण ने सोमवार को शपथ ली। हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डा.एस.मुरलीधर ने तीन नए न्यायाधीशों को विधि अनुसार पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। हाईकोर्ट के नए सम्मेलन कक्ष में आयोजित शपथ विधि कार्यक्रम में सबसे पहले गृह मंत्रालय की और उनके नियुक्ति संबंधित पत्र को पढ़े जाने के बाद उन्हें मुख्य न्यायाधीश ने शपथ दिलाई। कोरोना संक्रमण के मद्देनजर सीमित संख्या में गण मान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में यह शपथ विधि उत्सव चला। तीनों को न्यायाधीश के तौर पर राष्ट्रपति नियुक्ति देने के बाद इसके बारे में केंद्र कानून मंत्रालय की ओर से विज्ञप्ति प्रकाशित की गई है।

पुलवामा के बलिदानी की पत्नी शाजिया बोलीं, चुभते हैं सुरक्षाकर्मियों के योगदान पर पूछे जाने वाले सवाल

जम्मू । 'सवाल उठाना तो बहुत आसान है, लेकिन देश की खातिर कुछ कर गुजरना, उसके लिए अपनी जान दे देने से बड़ा सुबूत और क्या हो सकता है। दुख होता है जब देश और इसके बलिदानियों की खातिर की गई किसी कार्यवाही को लेकर सवाल पूछे जाते हैं।' पुलवामा हमले के बलिदानी हेड कांस्टेबल नसीर अहमद की पत्नी शाजिया कौसर ने दैनिक जागरण से बातचीत में कहा कि मेरी पूरी कोशिश है कि बेटा कासिफ भी बड़ा होकर उसी तरह देश की रक्षा करे, जैसे उसके पिता करते थे। मैं इस समय मां और पिता दोनों की भूमिका निभा रही हूं। सुरक्षा कर्मियों के बलिदान होने के बाद उनके स्वजन बड़ी मुश्किलों का सामना कर परिवार चलाते हैं। ऐसे में सवाल नहीं कुर्बानियों को याद रखना चाहिए। ऐसे सवाल चुभते हैं। शाजिया कौसर जम्मू के छन्नी हिम्मत में सीआरपीएफ की 76वीं बटालियन की ओर से आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम में स्वजन सहित शामिल होने आई थीं। इस दौरान शाजिया कौसर व परिवार के अन्य सदस्यों को भी सम्मानित किया गया। सीआरपीएफ जवान सुभाष ने कहा- परेशान करते हैं सवाल : श्रद्धांजलि समारोह में शामिल और पुलवामा हमले के समय लेथपोरा में मौजूद रहे सीआरपीएफ जवान सुभाष चंद्र ने कहा कि जगजाहिर है कि सब पाकिस्तान का किया हुआ है। ऐसे में पूछे जाने वाले सवाल परेशान करते हैं। हमें दुख सिर्फ इतना है कि पुलवामा में दुश्मन ने पीठ पीछे से वार किया था। दुश्मन सामने से आता तो आज हमारे सभी साथी जिंदा होते। देश की सुरक्षा से ज्यादा अहम कुछ नहीं है। अपने बलिदानियों के पदचिन्हों पर चलते हुए हम दुश्मन की हर चाल को नाकाम बनाने के लिए तैयार हैं। एक बार नहीं, कई बार होनी चाहिए सर्जिकल स्ट्राइक इस मौके पर मौजूद अन्य जवानों ने भी सियासी दलों के सवालों को अनुचित बताया। उन्होंने कहा कि आतंकवाद को जड़ से खत्म करने के साथ दुश्मन को कड़ा संदेश देने के लिए एक बार नहीं कई बार सर्जिकल स्ट्राइक होनी चाहिए। आतंक का फन कुचलने से ही देश का भविष्य सुरक्षित होगा। कई परिवारों के लाल बचेंगे। वहीं बिछुड़े साथियों को याद कर रहे सभी जवानों की आंखें नम थीं। इस मौके पर जवानों ने आतंकवाद के समूल नाश का संकल्प भी दोहराया। सियासी दल अभी भी मांग रहे हैं सुबूत दरअस पुलवामा हमले की तीसरी बरसी पर भी बालाकोट स्ट्राइक को लेकर सियासी दलों द्वारा सवाल उठाए जा रहे हैं। गत रविवार को तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चन्द्रशेखर राव ने कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी के बालाकोट सर्जिकल स्ट्राइक के सुबूत मांगने के प्रश्न को सही ठहराया था। राव ने कहा था कि वह भी इसके सुबूत देखना चाहते हैं। राहुल गांधी पुलवामा हमले को लेकर पिछले तीन वर्षों से ऐसे प्रश्न पूछते आ रहे हैं कि सर्जिकल स्ट्राइक करने के सुबूत क्या हैं। पुलवामा हमले का सबसे ज्यादा फायदा किसकों हुआ था ये सियासी सवाल देश के लिए दुश्मन से लड़ रहे सुरक्षा कर्मियों और उनके स्वजन को आहत कर रहे हैं। 76वीं बटालियन के भी पांच जवान हुए थे बलिदान : 14 फरवरी 2019 को पुलवामा के लेथपोरा में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के वाहनों के काफिले पर हुए आत्मघाती हमले में बल के 40 जांबाज बलिदान हो गए थे। इन बलिदानियों में 76वीं बटालियन के पांच जवान भी बलिदान हुए थे। आतंकियों का निशाना बनी बस 76वीं बटालियन के हेड कांस्टेबल जयमल क्षसह चला रहे थे। उनके साथ बटालियन के अन्य चार वीरों में जम्मू संभाग के राजौरी जिले के हेड कांस्टेबल नसीर अहमद, राजस्थान के कांस्टेबल रोहताश लांबा, पंजाब के कांस्टेबल सुखजिनदर व हिमाचल प्रदेश के कांस्टेबल तिलक राज शामिल थे। हेड कांस्टेबल नसीर अहमद ही जम्मू शहर के छन्नी हिम्मत स्थित केरिपुब की 76 बटालियन मुख्यालय से 14 फरवरी 2019 की सुबह रवाना हुई बस की सुरक्षा की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। बता दें कि उस दिन जम्मू से रवाना हुए 78 बसों के इस काफिले में करीब 2500 केरिपुब कर्मी थे। केरिपुब के सहायक सब इंस्पेक्टर मोहल लाल ने आतंकियों की कार पर फायक्षरग भी की थी। पुलवामा में हमले के चंद दिनों के बाद ही भारत ने पाकिस्तान के बालाकोट में एयर स्ट्राइक कर बलिदान का बदला ले लिया था।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के पंजीकरण के लिए अंतिम दिन आज, 60 प्रतिशत किसान करवा पाए पंजीकरण

झज्जर । फसल बेचने सहित अन्य सरकारी सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए सरकार द्वारा अपनी फसलों का पंजीकरण करवाना अनिवार्य किया गया है। इसके बाद भी जिले के करीब 60 प्रतिशत किसान ही पंजीकरण करवा पाए हैं। जबकि 40 प्रतिशत किसान अभी पंजीकरण करवाने से दूरी बनाए हुए हैं। बचे हुए किसानों के पास पंजीकरण का अंतिम अवसर मंगलवार ही बचा हुआ है। सरकार द्वारा मेरी फसल मेरा ब्यौरा पोर्टल पर पंजीकरण की अंतिम तिथि 15 फरवरी निर्धारित की थी। इसलिए जो किसान अभी भी बचे हुए हैं, वे मंगलवार को ही पंजीकरण करवा सकते हैं। फसल पंजीकरण को बढ़ाने के लिए प्रशासन द्वारा भी अभियान चलाए गए। इन अभियानों के बावजूद भी फसलों का पंजीकरण का आंकड़ा करीब 60 प्रतिशत पर ही रह गया। सरकार सरसों की खरीद 28 फरवरी से आरंभ करने जा रही है। ऐसे में उन किसानों की ही फसल की खरीद होगी जिन्होंने मेरी फसल मेरा ब्यौरा पोर्टल पर अपनी फसलों का पंजीकरण करवाया हुआ है। सरसों ही नहीं गेहूं व अन्य फसलों की सरकारी खरीद भी उन किसानों से ही की जाएगी, जो अपनी फसलों का पंजीकरण करवाएंगे। हालांकि इस वर्ष सरसों का बिजाई एरिया बढ़ा है, साथ ही पैदावार भी बढ़ने की उम्मीद है। जिले की बात करें तो गेहूं व सरसों का ही बिजाई एरिया सबसे अधिक है। जिले में 96 हजार 617 हेक्टेयर में गेहूं, 35 हजार 350 हेक्टेयर में सरसों, 1225 हेक्टेयर में बरसम, 925 हेक्टेयर में जौ व 198 हेक्टेयर में चने की बिजाई की हुई है। अब जो भी किसान अपनी फसलों का पंजीकरण नहीं करवा पाए, उनके पास 15 फरवरी तक करवाने का मौका है। पंजीकरण के बाद ही किसान सरकार द्वारा किसानों की सुविधा के लिए चलाई जाने वाली योजनाओं का भी लाभ ले पाएंगे। फसल.हरियाणा.जीओवी.इन पोर्टल पर पंजीकरण करवा सकते है। फसलों का पंजीकरण करने के बाद टीम फील्ड में जाकर सर्वे कर रही है। सर्वे के दौरान यह देखा जाता है कि जो जानकारी किसान ने पोर्टल पर भरी है, वह सही है या नहीं।

दिनाँक 14/02/2022 को वैश्य महासम्मेलन महिला इकाई तहसील ब्यौहारी के तत्वाधान मे , तहसील इकाई की अध्यक्ष अर्चना चंद्रप्रकाश के नेतृत्त्व मे आदर्श पब्लिक स्कूल के प्रांगण मे मातृ पितृ पूजन का आयोजन किया गया

(आधुनिक समाचार सेवा)
दुर्गेश कुमार

शहडोल। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलन के साथ किया गया । आए हुए सभी अतिथियों का कुमकुम और माल्यार्पण से स्वागत किया गया स्वागत भाषण महिला इकाई की अध्यक्षा अर्चना चंद्रप्रकाश गुप्ता जी के द्वारा दिया गया और स्वागत गीत श्रीमती कंचन गुप्ता, शैलजा गुप्ता एवं सविता गुप्ता जी के द्वारा गाया गया । इसके बाद बच्चों के द्वारा अपनी मा के साथ बहुत ही मनमोहक प्रस्तुती (माँ बाप से बढ़कर जग मे नही कोई और खजाना) सॉग मे दी गई इसके बाद सभी महिलाओ नें अपने अपने माँ पापा एवं सासु माँ की पूजा बिधि विधान से मंत्रोच्चारण के साथ किया गया इसके बाद वहां पर आए हुए सभी बच्चों ने अपने माँ पापा की पूजा की और बच्चों.के द्वारा किया संस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया बच्चो के साथ साथ बडे बुजुर्ग भी बहुत उत्साहित थे । कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती सविता अजय गुप्ता जी (जिला प्रभारी महिला इकाई ग्रामीण) विशिष्ट अतिथि के रूप मे रानी गुप्ता जी, श्रीमती रेणु गुप्ता, ममता गुप्ता, नीतू जैन ,राजकुमारी मदन गुप्ता जी रही और कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रीति जैन जी ने की। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रिया जैन जी ने किया और. आभार सुधा गुप्ता जी के द्वारा किया गया कार्यक्रम मे महिला इकाई की सभी बहनों सपना जैन, रंजीता संगीता , मिष्टी जैन, साधना ,राखी , शशि सिंपल कविता, मीना, के साथ साथ अन्य बहनों का सहयोग रहा। सभी लोगों को जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्यक्रम मे सहयोग किया आप सभी को धन्यबाद एवं आभार ।

मई तक नोएडा को मिलेगा पहला डाग पार्क

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। सेक्टर 137 में डॉग लवर्स की सहूलियत के लिए डॉग पार्क बनाया जा रहा है। इस पार्क में डॉग्स के खेलकूद से लेकर वैक्सीनेशन आदि तक की सुविधाएं होंगी। प्राधिकरण के अधिकारियों की उम्मीदों के मुताबिक, अगर सब कुछ ठीक रहा तो प्राधिकरण इस में 2 एकड़ में बनने वाले इस डॉग पार्क पर प्राधिकरण करीब 3.5 करोड़ रूपए खर्च कर रहा है। इस डॉग पार्क में खेल, वॉकवे और झूले भी लगाए जाएंगे। यह विशेष रूप से इस प्रकार से बनाया जा रहा है कि इसमें पालतू जानवरों को प्रशिक्षित भी किया जा सके। प्राधिकरण के अधिकारियों की योजना है कि इस डॉग पार्क में विशेष कार्याधिकारी इंदु प्रकाश ने सेक्टर 137 में बनने वाले डॉग पार्क का निरीक्षण किया। इस निरीक्षण के दौरान कई अधिकारियों और कर्मचारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी जारी किए। इस मौके पर प्राधिकरण के विशेष कार्याधिकारी इंदु प्रकाश सिंह ने बताया कि अब तक शहर में डॉग आदि पालतू पशुओं के लिए कोई ऐसी सुविधा नहीं थी।

डॉग पार्क की शुरूआत मई के प्रथम सप्ताह तक कर सकता है। प्राधिकरण के अधिकारियों से मिली जानकारी के मुताबिक, इस डॉग पार्क में कुत्तों को खेलने, इलाज, खाने-पीने और प्रशिक्षित करने की सुविधाएं दी जाएंगी। सेक्टर 137 इलाज के लिए पशु चिकित्सक, डॉग ट्रेनर और क्योस्क भी लगाया जाए। वहीं, इस पार्क में शहर के लोग अपने कुत्तों को घुमाने और खेलने के लिए ला सकेंगे। प्राधिकरण के विशेष कार्याधिकारी ने किया डॉग पार्क का निरीक्षण प्राधिकरण के प्राधिकरण के अधिकारियों ने इस संबंध में प्लानिंग करने के बाद इस कार्ययोजना पर काम शुरू किया। सेक्टर 137 में एक ऐसा पार्क बनाया जा रहा है। जिसमें कुत्तों के स्वास्थ्य से लेकर इनके मालिकों की सहूलियत के भी तमाम इंतजाम होंगे।

गुजरात में आज से खुल जाएंगे प्री-स्कूल व आंगनबाड़ी

अहमदाबाद। कोरोना महामारी के चलते गुजरात में बंद हुए प्री स्कूल व आंगनबाड़ी 17 फरवरी से खोल दी जाएंगी। शिक्षा मंत्री जीतूभाई वाघाणी ने इसकी घोषणा की है। मार्च 2020 में लाकडाउन के साथ ही गुजरात में प्री प्राइमरी तथा आंगनबाड़ी केंद्रों को बंद कर दिया गया था। करीब 2 साल से बच्चे आनलाइन पढ़ाई कर रहे थे। हालांकि कक्षा 9 से 12वीं के स्कूल अगस्त 2021 में ही खोल दिए गए थे, लेकिन अब प्री प्राइमरी व आंगनबाड़ी को भी गुरुवार से खोलने की घोषणा कर दी गई है शिक्षा मंत्री वाघाणी ने बताया कि मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल की अध्यक्षता में हुई कोर कमेटी की बैठक में राज्य में आंगनबाड़ी एवं प्री प्राइमरी स्कूल को खोलने पर गहन चर्चा हुई। राज्य में कोरोना की स्थिति को देखते हुए बच्चों के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए स्कूलों को बंद किया गया था लेकिन अब हालात अनुकूल होने तथा कोरोना का असर घटने के साथ ही बच्चों के लिए स्कूल में शिक्षा की व्यवस्था को भी बहाल किया जाएगा। सरकार न प्री स्कूल एवं आंगनवाड़ी के बच्चों की शिक्षा के लिए एक खास एक्शन प्लान तैयार किया है। इसके तहत बच्चों को अलग-अलग सोर्स एवं माध्यमों से स्टडी कराई जाएगी ताकि बच्चे स्कूलों में रूचि लेकर के पढ़ाई कर सकें शिक्षा मंत्री वाघाणी ने बताया कि सरकार एवं स्कूल संचालकों के बीच हुई वार्ता के बाद सरकार ने सभी स्कूल संचालकों को कोरोना महामारी को लेकर जारी दिशा निर्देशों का पालन करते हुए प्राइमरी स्कूल खोलने की मंजूरी दी है। स्कूल में आकर पढ़ने वाले बच्चों के लिए अभिभावकों से सहमति पत्र अनिवार्य किया गया है। राज्य में कक्षा 1 से लेकर 10वीं एवं 12वीं के स्कूल तथा कालेज पहले ही खोले जा चुके हैं, अब प्रा स्कूल एवं आंगनबाड़ी को भी खोला जा सकेगा।

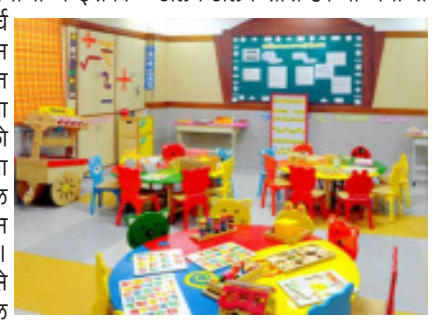

गरीब निर्धन कन्याओं का सामूहिक विवाह आयोजन संपन्न

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। श्री बालाजी मानव सेवा समिति के अध्यक्ष ओम प्रकाश अग्रवाल एवं पूनम अग्रवाल की 25 वीं वैवाहिक वर्षगांठ के उपलक्ष्य में द्वारा आयोजित किया गया इस आयोजन में 15 कन्या एवं 15 वरों ने एक साथ हिंदू रीति रिवाज से फेरे लिए एवं वैवाहिक बंधन में बंधे । श्री बालाजी मानव सेवा समिति के संस्थापक संयोजक सतेन्द्र राघव ने संचालन कर जानकारी देते हुए बताया कि हमारे ट्रस्ट के अध्यक्ष ओम प्रकाश अग्रवाल समाज में अपना बड़ा सहयोग और सामाजिक कार्यों के लिए अग्रणी भूमिका निभाते हुए मानव कल्याण के लिए कार्य करते रहते हैं। यह उनकी प्रेरणा से ग्रेटर नोएडा में पहला कार्यक्रम है जो बड़ी ही भव्यता और दिव्यता के साथ पूर्ण हुआ है । कार्यक्रम के मीडिया प्रभारी मुकुल गोयल ने बताया की कार्यक्रम वैदिक मंत्र उच्चारण से गुरुकुल के आचार्य रवि कांत दीक्षित एवं उनके ब्राह्मण आचार्यों की उपस्थिति में वैदिक पद्धति से संपूर्ण हुआ । सभी 15 वर वधू को लगभग 131 घरेलू सामान देकर आशीर्वाद प्रदान किया गया। यह कार्यक्रम आगामी वर्षों में श्री बालाजी मानव सेवा समिति के तत्वावधान में चलता रहेगा ।ऐसे संकल्प के साथ सभी ने इसमें उपस्थित होकर वर वधू को आशीर्वाद प्रदान किया । कार्यक्रम में विशेष रुप से कुलदीप शर्मा ,मनोज गर्ग ,मनोज सिंघल ,सत्यप्रकाश अग्रवाल ,रामअवतार अग्रवाल ,मुकुल गोयल ,प्रमोद चौहान ,विनीत पांडे ,सरदार मंजीत सिंह ,विजेंद्र आर्य ,सौरभ बंसल , अजय गुप्ता,कपिल गुप्ता, श्रीमती वीना अरोड़ा ,सरोज तोमर ,प्रतिमा राघव ,संगीता सक्सेना ,महिमा पांडे,आदि उपस्थित रहे।

आमिर खान की बेटी आइरा खान ब्वॉयफ्रेंड नूपुर शिखरे के साथ हुईं रोमांटिक, बताया हमेशा साथ रहने का नुस्खा

नई दिल्ली। वेलेंटाइन डे के मौके पर कई बॉलीवुड सेलेब्रिटीज ने अपने पार्टनर्स के साथ तस्वीरें शेयर करके मोहब्बत के दिन को सेलिब्रेट किया। जिनकी शादी हो चुकी है, उन्होंने अपने पतियों के साथ रोमांटिक तस्वीरें साझा की वहीं जो अभी रिलेशनशिप में हैं उन्होंने अपने ब्वॉयफ्रेंड या गर्लफ्रेंड के साथ तस्वीरें शेयर करके रोमांटिक मैसेज लिखे। आमिर खान की बेटी आइरा खान फिटनेस एंथियोसियास्ट नूपुर शिखरे को डेट कर रही हैं और अक्सर उनके साथ सोशल मीडिया में अपनी बिंदास तस्वीरें शेयर करती हैं। ऐसे में भला वेलेंटाइन डे कैसे मिस हो सकता था आइरा ने नूपुर के साथ एक दिलचस्प रोमांटिक तस्वीर शेयर की और इसके साथ मजेदार कैप्शन में प्यार को जिंदा रखने का नुस्खा भी साझा किया। आइरा ने इंस्टाग्राम पर नूपुर के साथ जो फोटो शेयर किया, उसमें नूपुर सोने की मुद्रा में लेटे हुए हैं और आइरा ने अपना चेहरा नूपुर

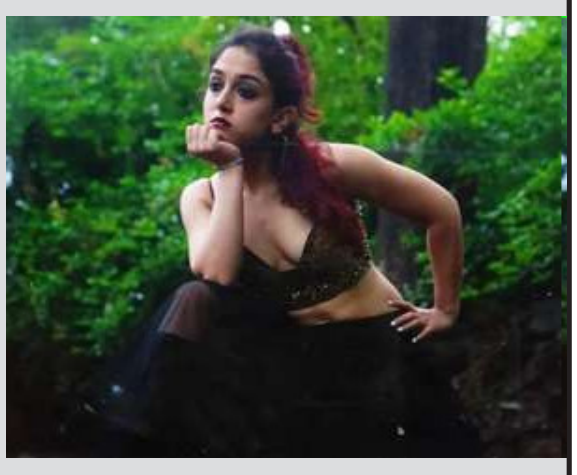

के चेहरे पर रखा हुआ है। इस फोटो के साथ आइरा ने मजाक में लिखा- जो कपल दोपहर की नींद साथ में लेते हैं, वो हमेशा साथ रहते हैं। वेलेंटाइन डे मुबारक हो। सभी को सुरक्षित, आरामदायक भरोसे वाला, संतोषजनक और भावनाओं से प्यार से लबालब दिल की शुभकामनाएं।

मृणाल ठाकुर ने शेयर कीं अब तक की सबसे बोल्ड तस्वीरें, बिकिनी शॉर्ट्स में एक्ट्रेस को देख फैंस ने दी ऐसी प्रतिक्रिया

नई दिल्ली। पिछले दिनों अपने एक इंटरव्यू को लेकर खासी चर्चा में रहीं बॉलीवुड एक्ट्रेस मृणाल ठाकुर ने अब सोशल मीडिया में कुछ बिंदास तस्वीरें पोस्ट की हैं। इन तस्वीरों को देखकर उनके फैंस तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। कुछ तस्वीरों में मृणाल की हॉटनेस की तारीफ कर रहे हैं तो कुछ को उनका यह अंदाज रास नहीं आ रहा है। आम तौर पर ट्रेडिशन्ल, वेस्टर्न या साड़ी में अपनी फोटो शेयर करने वाली मृणाल ने सोमवार को बेहद बोल्ड तस्वीरें साझा कीं। इन तस्वीरों में मृणाल ने पिंक कलर का बिकिनी टॉप के साथ शॉर्ट्स पहना है और अलग-अलग ढंग से पोज दे रही हैं। तस्वीरें मृणाल की श्रीलंका वेकेशन की हैं। इन तस्वीरों के साथ मृणाल ने नारियल के पेड़ और नारियल की इमोजी बनाकर लिखा- पीएस हैप्पी इंडिपेंडेंस डे। इन फोटो में मृणाल का बदला हुआ रूप देखकर फैंस भी हैरान हैं। कई फैंस ने उनके इस लुक की तारीफ की है और दिलों की इमोजी बनाकर अपना प्यार जाहिर किया है तो कुछ ऐसे भी जिन्हें एक्ट्रेस का यह बोल्ड लुक नहीं भा रहा। ऐसे ही एक फैन ने लिखा- आपसे यह उम्मीद नहीं थी। कुछ फैंस ने

मृणाल को वेलेंटाइन डे भी विश किया। मृणाल, उन एक्ट्रेसेज में शामिल है, जिन्होंने छोटे पर्दे से बड़े पर्दे का सफर तय किया है। मृणाल ने लव सोनिया से हिंदी फिल्मों में डेब्यू किया था और सुपर 30 में बतौर लीड एक्ट्रेस पहली बार बड़े पर्दे पर नजर आयी थीं। इस फिल्म में उन्होंने ऋतिक रोशन के अपोजिट फीमेल लीड रोल निभाया था। 2021 में मृणाल फरहान अख्तर के साथ तूफान में नजर आयी थीं, जबकि धमाका में उन्होंने कार्तिक आर्यन के साथ काम किया। मृणाल अब शाहिद कपूर के साथ जरसी में फीमेल लीड रोल में दिखेंगी। पिछले दिनों अपने एक इंटरव्यू के लिए मृणाल खबरों में रही थीं, जिसमें उन्होंने अपनी जिंदगी के कुछ संघर्ष भरे दिनों को याद किया था। इस इंटरव्यू से निकली कुछ खबरें सोशल मीडिया में वायरल हुई थीं, जिन पर मृणाल ने एतराज जताया था।

वैलेंटाइन डे पर मलाइका अरोड़ा को अपनी बाहों में समेटे नजर आए अर्जुन कपूर

नई दिल्ली। वैलेंटाइन डे के मौके पर स्टार्स ने सोशल मीडिया पर अपने पार्टनर्स को लेकर जमकर पोस्ट शेयर किए। ऐसे में अर्जुन कपूर ने भी मलाइका अरोड़ा बेहद रोमांटिक पोस्ट शेयर किया है। इस पोस्ट के साथ ही अर्जुन ने अपनी लेडी लव यानी मलाइका को बेदह ही खास फील कराया। वहीं अर्जुन से पहले मलाइका ने भी उनके लिए वैलेंटाइन डे पर एक रोमांटिक तस्वीर शेयर की थी। यहां देखें अर्जुन कपूर की पोस्ट अर्जुन कपूर ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर मलाइका अरोड़ा के लिए वैलेंटाइन डे पर एक खास पोस्ट शेयर की है। इस पोस्ट में आप देख सकते है कि अर्जुन ने मलाइका के साथ खूबसूरत सी फोटो शेयर की है। इस तस्वीर के साथ ही अर्जुन ने कैप्शन में लिखा, 'जब वो दूर जाती है, तो कोई रोशनी नहीं होती है। जब वो दूर जाती है, तो कोई धूप नहीं होती है। जब वो दूर जाती है, तो कोई रोशनी नहीं होती। जब भी वो दूर जाती है, तो बहुत दूर तलक जाती है।' इस कैप्शन के जरिए अर्जुन ने अपनी जिंदगी में मलाइका की खास जगह के बारे में बताया। एक्टर के इस पोस्ट को फैंस काफी पसंद काफी पसंद कर रहे हैं। वहीं कई यूजर्स उनकी जोड़ी को फेवरेट बताते हुए उनसे पूछ रहे हैं कि वो शादी कब करेंगे आपको बता दें कि अर्जुन कपूर से कुछ घंटों पहले ही मलाइका ने भी पोस्ट शेयर कर अर्जुन को वैलेंटाइन डे विश किया था। मलाइका ने अपने

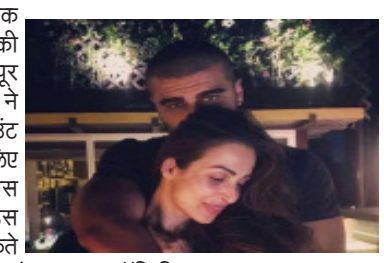

ऑफिशियल इंस्टाग्राम पर एक रोमांटिक तस्वीर शेयर की थी। इस तस्वीर में देखा जा सकता है कि दोनों एक दूसरे की बाहों में खोए दिख रहे हैं। वहीं अर्जुन कपूर अपने लव लेडी के फॉरहैड पर किस करते हुए नजर आ रहे हैं। इस प्यार के पलो को फैंस के साथ शेयर कर मलाइका ने लिखा, 'मेरा'। इसके साथ ही उन्होंने एक हार्ट का इमोजी भी शेयर किया है।

ऐसी ड्रेस पहन बहन के साथ एयरपोर्ट में पहुंचीं आलिया भट्ट, लोगों ने कहा 'क्या ये सब्जी मार्केट के लिए जा रही हैं

नई दिल्ली। बॉलीवुड के बहुत से सितारे हैं जो अपने स्टाइल और लुक लेकर काफी चर्चा में रहते हैं। सितारों को बहुत बार अपनी

ड्रेस की वजह से ट्रोल भी होना पड़ जाता है। अभिनेत्री आलिया भट्ट अपनी ड्रेस की वजह से ट्रोलर्स के निशाने पर आ गई हैं। इन दिनों वह अपनी आने वाली फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी को लेकर काफी काफी चर्चा में हैं। वह फिल्म का जोर शोर से प्रोमोशन भी कर रही हैं। फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी का बर्लिन में भी प्रीमियर रखा गया है। जिसके लिए आलिया भट्ट अपनी बहन शाहीन के साथ सोमवार को बर्लिन के लिए रवाना हुई हैं। उन्हें और शाहीन भट्ट को मुंबई एयरपोर्ट पर स्पॉट किया गया था। इस दौरान आलिया भट्ट पूरी व्हाइट ड्रेस में नजर आईं। उन्होंने ढीले ढाले मैचिंग ट्राउजर के साथ व्हाइट टर्टल नेक क्रॉप टॉप पहना हुआ था। वहीं आलिया बहन शाहीन भट्ट ने ऑल ब्लैक लुक चुना और ब्लैक स्वेटशर्ट को मैचिंग लेदर पैंट के साथ पेयर किया। दोनों ने एयरपोर्ट पर हाथों में हाथ डाले और पैपराजी के सामने पोज दिए। आलिया और शाहीन भट्ट के वीडियो को सिलेब्रिटी फोटोग्राफर विरल भियानी ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया है। आलिया भट्ट के इस वीडियो को जहां उनके फैंस खूब पसंद कर रहे हैं, वहीं कई सोशल मीडिया यूजर्स उन्हें ट्रोल भी कर रहे हैं। नाम के यूजर ने आलिया और शाहीन भट्ट के वीडियो पर कमेंट करते हुए लिखा, 'दीपिका को कॉपी कर रही हैं आलिया। ने लिखा है, 'क्या ये सब्जी मार्केट के लिए जा रही हैं, बैग देखकर तो ऐसा ही लग रहा है कि ग्रॉसरी शॉपिंग करने जा रही है।' ने लिखा, 'यह झोला क्यों लिया है सब्जी का।' इनके अलावा और भी कई सोशल मीडिया यूजर्स ने कमेंट कर आलिया भट्ट को ट्रोल किया है। बात करें आलिया भट्ट की फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी की तो इस फिल्म में वह लेडी डॉन की भूमिका अदा कर रही हैं। फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी में आलिया भट्ट के साथ उनके सीनियर कलाकार अजय देवगन मुख्य भूमिका में हैं। संजय लीला भंसाली की मोस्ट अवेटेड फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी 25 फरवरी को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है। इस फिल्म में आलिया भट्ट कमाठीपुरा की एक प्रॉस्टीट्यूट गंगूबाई को वैश्यावृति के काम में धकेलने से लेकर उनके राजनीतिक सफर को दर्शाती हुई नजर आएंगी।

वैलेंटाइन डे पर करण कुंद्रा ने तेजस्वी प्रकाश के पिता के सामने की शिकायत, खोली एक्ट्रेस की पोल, देखें वीडियो

नई दिल्ली। 'बिग बॉस 15' के विनर की ट्रॉफी अपने नाम करने वाली टीवी एक्ट्रेस तेजस्वी प्रकाश इन दिनों एक्टर करण कुंद्रा संग अपने रिलेशनशिप को लेकर काफी सुर्खियों में बनीं हुई हैं। 'बिग बॉस 15' में एक दूसरे के करीब आए इस कपल को शो खत्म होने के बाद भी अक्सर एक साथ स्पॉट किया जाता है। वहीं करण ने

वैलेंटाइन डे को खास बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी। इस मौके को और भी खास बनाने के लिए दोनों सोशल मीडिया पर लाइव आए और फैंस से बातचीत की। लाइव सेशन में ढेर सारी बातों के साथ करण ने तेजस्वी की खूब टांग खिंचाई भी की। साथ ही दोनों के फैंस ने बार-बार यही सवाल पूछा कि आखिर वो शादी के बंधन में कब बंधेंगे करण कुंद्रा ने अपने इंस्टाग्राम आकउंट पर लाइव सेशन का वीडियो शेयर किया है। इस वीडियो में आप देख सकते है कि करण फैंस से लगातार तेजस्वी प्रकाश की शिकायत करते दिख रहे है। करण वीडियो में कहते है, 'देखो दोस्तों मैंने वैलेंटाइन डे पर अपना वादा पूरा किया और मै लाइव आ गया। वहीं मैडम अभी तक नहा रही हैं। उनको क्या फरक पड़ता है कि उनका ब्वॉयफ्रेंड इनती दूर से ड्राइव करके आया है। इसके साथ ही वह तेजस्वी की मां से कहते हैं काश आपने बचपन में उनकी पिटाई की होती तो आज वह सुधर गई होती। वहीं करण ने शिकायत के लहजे में कहा, 'मैडम के लिए मैंने इतना इतना क्यूट पोस्ट शेयर किया और इनके इंस्टाग्राम के लास्ट वीडियो में रोहित सुचांती नजर आ रहा है।' वहीं करण की बात को बीच में ही काटते हुए तेजस्वी ने कहा, वो कल की वीडियो है मैंने आज भी पोस्ट डाला है।' इसी के साथ ही करण बताते हैं कि उन्होंने तेजस्वी के लिए बहुत प्यारा सा सरप्राइज प्लान किया था लेकिन एक्ट्रेस ने उन्हें घर पर ही बुला लिया। इसी के साथ ही करण ने ये भी बताया कि 'नागिन 6' के इतने बिजी शेड्यूल होने के बावजूद भी तेजस्वी ने अपने मम्मी पापा की मदद से उनके लिए बिरयानी बनाई जो कि काफी लाजवाब थी। वहीं लाइव सेशन में कई दफा करण कुंद्रा ने अपने प्यार का इजहार भी किया।

'शिल्पा शेट्टी ये देखो राज कुंद्रा क्या कर रहे हैं', मलाइका अरोड़ा की बहन अमृता की इस तस्वीर देख लोगों ने किया ट्रोल

नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्ट्रेस और डांसर मलाइका अरोड़ा हमेशा सुर्खियों में बनीं रहती हैं। वैलेंटाइन डे के खास मौके पर भी मलाइका ब्वॉयफ्रेंड अर्जुन कपूर के लिए रोमांटिक तस्वीर शेयर करने को लेकर भी खूब छाई रहीं। दोनों ने एक दूसरे के सोशल मीडिया पर रोमांटिक पोस्ट शेयर कर विश किया। वहीं अब इस बीच मलाइका अरोड़ा की बहन अमृता अरोड़ा अपनी एक रोमांटिक तस्वीर को लेकर छाई हुई है। लेकिन इस तस्वीर की वजह से वह सोशल मीडिया पर ट्रोल भी की जा रही हैं। इस तस्वीर को देखने के बाद लोग शिल्पा शेट्टी से उनके पति राज कुंद्र को लेकर शिकायत करते दिख रहे हैं। जानें आखिर माजरा क्या है दरअसल,

मलाइका अरोड़ा की बहन अमृता अरोड़ा ने वैलेंटाइन डे के मौके पर इंस्टाग्राम पर पति शकील लड़क के साथ एक रोमांटिक तस्वीर शेयर की है। इस तस्वीर मेंदोनों के बीच रोमांटिक केमेस्ट्री साफ देखी जा सकती है। आप देख सकते हैं कि दोनों अंडरवॉटर किस करते दिख रहे हैं। लेकिन इस तस्वीर के देखकर यूजर्स उन्हें ट्रोल करते दिख रहे हैं। अमृता और शकील की तस्वीर को पहली नजर में देखकर लोगों को लगा किया ये राज कुंद्रा हैं। इसी को लेकर लोग उनकी टांग खींचते दिख रहे हैं। इस तस्वीर पर एक यूजर ने कमेंट करते हुए लिखा, 'मुझे लगा राज कुंद्रा है। तो वहीं एक दूसरे यूजर ने लिखा है 'शिल्पा शेट्टी ये देखो अंडर वाटर राज कुंद्रा क्या कर रहे हैं वहीं कई यूजर्स को अमृता और शकील की तस्वीर काफी पसंद आ रही है। इस पर कमेंट कर यूजर्स उनकी तारीफ करते भी दिख रहे हैं। एक ने कमेंट करते हुए लिखा, 'रॉकिंग वैलेंटाइन आपको बता दें कि अमृता अरोड़ा ने साल 2009 में कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री से ताल्लुक रखने वाले शकील लड़क से शादी की थी। दोनों तीन रीति रिवाजों से साथ शादी के बंधन में बंधे थे। सबसे पहले उन्होंने क्रिश्चियन वेडिंग की इसके बाद दोनों का निकाह हुआ था। वहीं आखिरी में दोनों ने पंजाबी रीति रिवाज के साथ शादी की थी। वहीं इस कपल के दो बच्चे है।

'पठान' की शूटिंग के लिए स्पेन जा सकते हैं शाह रुख खान और दीपिका पादुकोण

नई दिल्ली। बॉलीवुड के किंग शाह रुख खान अपनी आगामी फिल्म पठान से बड़े पर्दे पर वापसी के लिए तैयार हैं। अब जानकारी आ रही है कि शाह रुख खान जॉन अब्राहम और अभिनेत्री दीपिका पादुकोण जल्द ही इंटरनेशनल शेड्यूल को शूट करने के लिए रवाना हो सकते हैं। पिंकविला की रिपोर्ट के अनुसार फिल्म से जुड़े सूत्र ने बताया कि, शाह रुख खान, जॉन अब्राहम और दीपिका पादुकोण मार्च के पहले हफ्ते में फिल्म पठान की शूटिंग के लिए स्पेन जा सकते हैं। जहां फिल्म के कई महत्वपूर्णा सीन्स को फिल्माने वाले हैं। वहीं, रिपोर्ट के अनुसार टीम फरवरी के आखिरी हफ्ते में मुंबई में भी फिल्म के कुछ हिस्सों की शूटिंग करेगी। मुंबई में शूटिंग खत्म करने के बाद टीम स्पेन शेड्यूल के लिए रवाना होगी। जानकारी के अनुसार पठान के स्पेन शेड्यूल को पिछले साल शूट किया जाना था। लेकिन कोरोना वायरस की तीसरी लहर के चलते फिल्म की शूटिंग को रोक दिया गया था। अब स्थिति सामान्य होने के बाद पर फिर से फिल्म की शूटिंग को शुरू किया जा रहा है। बता दें पिछले साल की शुरुआत में पठान के दुबई सेट की कई वीडियो सोशल मीडिया पर लीक हो गई थी। इस वीडियोज को सोशल मीडिया यूजर ने सर्कुलेट कर दिया था। जिसमें अभिनेता चलती हुई कार के ऊपर खड़े होकर फाइट सीक्वेंस फिल्माते दिख रहे थे। इस फिल्म में शाह रुख खान के साथ अभिनेत्री दीपिका पादुकोण और एक्टर जॉन अब्राहम भी अहम किरदार में नजर आने वाले हैं। खान फिल्मों में लगभग 3 साल बाद 'पठान' से वापसी कर रहे हैं। लेकिन उन्होंने अपनी इस फिल्म को लेकर अभी तक आधिकारिक घोषणा नहीं की है।

बबिता से शादी कर रणधीर कपूर ने पहली बार बदल दी थी 'कपूर खानदान' की ये परंपरा इस वजह से रिश्ते में आई दूरी

नई दिल्ली। रणधीर कपूर कई फिल्मों में अभिनय कर काफी सुखिय्यां बटोर चुके हैं। उन्होंने एक से बढ़कर एक फिल्में दी हैं। रणधीर हिंदी सिनेमा के शोमैन राज कपूर के बेटे हैं। उन्होंने फिल्मों में बतौर कलाकार अपने करियर की शुरुआत की थी। रणधीर कपूर का जन्म 15 फरवरी 1947 को मुंबई में हुआ था। उनके दादा पृथ्वीराज कपूर भी हिंदी सिनेमा के दिग्गज कलाकार और फिल्मकार थे। घर

में बचपन से फिल्मी माहौल होने के कारण उनकी भी रूचि शुरू से अभिनय का ओर रही थी। रणधीर कपूर ने सबसे पहले बाल कलाकार के तौर पिता राज कपूर की फिल्म 'श्री 420' और 'दो उस्ताद' में काम किया था। जिसे पर्दे पर दर्शकों ने खूब पसंद किया था। बतौर मुख्य अभिनेता रणधीर कपूर ने साल 1971 में फिल्म कल आज कल से बॉलीवुड में डेब्यू किया था। इस फिल्म को भी दर्शकों का काफी प्यार मिला था। इसके बाद रणधीर कपूर रामपूर का लक्ष्मण, जवानी दिवानी, हाथ की सफाई, धर्म कर्म, चाचा भतीजा, कसमें वादे, आखिरी दुख, पुकार, राज तेरी गांगा मैला, हाउसफुल और हाउसफुल 2 जैसी कई शानदार फिल्मों में काम किया। एक्टिंग के अलावा रणधीर कपूर हिना, प्रेम ग्रंथ और आ अब लौट चलें जैसी फिल्मों का निर्माण भी किया है। 1971 से 1975 के दौर में रणधीर कपूर बॉलीबुड के तीसरे सबसे ज्यादा कमाई करने वाले अभिनेता थे। रणधीर ने 1972 में लगातार तीन फिल्में सुपरहिट दी थी। लेकिन साल 1985 के दौरान उनका करियर लगभग खत्म हो रहा था और ऐसे में रणधीर ने खुद को फिल्मों से दूर कर लिया। फिल्मों के अलावा रणधीर कपूर अपनी निजी जिंदगी को लेकर भी खूब चर्चा में रहे हैं। उनकी पतने खूबसूरत अदाकारा बबिता हैं। बबिता से अभिनेता को पहली नजर में ही प्यार हो गया था। वह जल्द से जल्द बबिता से शादी करना चाहते थे लेकिन उस समय कपूर खानदान में किसी अभिनेत्री की शादी कपूर खानदान में नहीं हुई थी, ऐसे में पूरा परिवार रणधीर के इस फैसले के खिलाफ था। रणधीर को बबिता से इतना प्यार हो गया था कि वह उनसे शादी करने के लिए अपने परिवार से रिश्ता तोड़ने तक के लिए तैयार हो गए थे। बबिता के कहने पर उन्होंने अपने पिता राज कपूर से अपने और बबिता के रिश्ते को लेकर बात की थी पर राज कपूर बबिता को अपनी फिल्मों की हीरोइन बनाने के लिए तैयार थे, लेकिन घर की बहू नहीं। रणधीर और बबिता अक्सर पार्टी में और दोस्तों के साथ नजर आते रहे, वहीं दूसरी तरफ बबिता ने रणधीर पर शादी का दबाव ड़ाला। ऐसे में एक बार फिर से रणधीर ने अपने से शादी के लिए मंजूरी दी। शादी के मंजूरी मिली लेकिन उस दौरान राज कपूर से शर्त रखी की अगर वो दोनों शादी करते हैं तो बबिता को अपना फिल्मी करियर छोड़ना पड़ेगा। साल 1971 में बबीता और रणधीर कपूर ने शादी कर ली। शादी के बाद से रणधीर और बबिता एक अलग फ्लैट में रहते थे, लेकिन रणधीर की शराब की लत और करियर को लेकर उनकी लापरवाही बबिता को सहन नहीं होती थी। ऐसे में बबिता ने करीना के जन्म के बाद अभिनेत्री ने घर छोड़ दिया। बबिता ने अपनी दोनों बेटियों करिश्मा और करीना को लेकर अलग रहने लगी और अपने दम पर ही उनकी परवरिश भी की। उस दौरान रणधीर अपने बच्चों से मिलने आते थे, लेकिन ये दोनों साथ नहीं रहते थे। हालांकि अब रणधीर कपूर और बबिता साथ रहते हैं।

राखी सावंत ने पति से अलग होने की वजह का किया खुलासा, कहा- उनकी पहले से पत्नी और एक बच्चा है, मेरा दिल टूट गया

नई दिल्ली। रियलिटी शो बिग बॉस 15 की एक्स कंटेस्टेंट्स राखी सावंत अपने पति रितेश से अलग को चुकी हैं। इस बात की जानकारी अभिनेत्री ने सोशल मीडिया के जरिए दी थी। अब अब राखी सवांत ने

अलग होने की वजह का खुलासा किया है। उन्होंने बताया है कि रितेश कानूनी परेशानियों से जूझ रहे हैं और अपने बिजनेस में वह सारे पैसे भी गवां चुके हैं। राखी सावंत ने अंग्रेजी वेबसाइट टाइम्स ऑफ इंडिया से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने पति रितेश से अलग होने की वजह का खुलासा किया है। राखी सावंत ने कहा, 'उन्होंने मुझे छोड़ दिया! मैं उनसे बहुत प्यार करती थी और उन्होंने मुझे छोड़ दिया। कुछ हफ्ते पहले बिग बॉस के बाद हम मुंबई में अपने घर में एक साथ रहने लगे, लेकिन कल उन्होंने अपना बैग पैक किया और चला गए।' अभिनेत्री ने आगे कहा, 'रितेश कानूनी परेशानी में है क्योंकि उन्होंने अपनी पहली पतने को तलाक नहीं दिया और अब वह मेरे साथ नहीं रहना चाहते है। उन्होंने कहा कि उन्होंने अपने बिजनेस में भी पैसे गंवा दिए क्योंकि मेरे साथ बिग बॉस के घर में प्रवेश करने के बाद उन्हें बहुत सारी जांच से गुजरना पड़ा। बिग बॉस के घर से बाहर आने के बाद जब मुझे पता चला कि उनकी एक पतने और एक बच्चा है तो मेरा दिल टूट गया। ड्रामा क्वीन ने आगे कहा, 'मैं एक महिला और एक बच्चे के साथ अन्याय नहीं कर सकती। मैं इस सच के साथ रह हूं कि उसने मुझे छोड़ दिया है और सब कुछ खत्म हो गया है।' राखी सावंत ने रितेश के साथ अपनी मुलाकात को भी याद किया है। उन्होंने कहा, 'हम व्हाट्सएप के जरिए जुड़े और हमने लगभग 6 महीने तक बातचीत की। फिर उन्होंने अपनी लोकेशन, बैंक अकाउंट डिटेल्स और अन्य चीजें भी भेजीं और मैंने उन पर विश्वास किया। राखी सावंत ने कहा, 'उन्होंने शादी का प्रस्ताव रखा और चूंकि मैं भी अपनी जिंदगी में किसी को चाहती थी, इसलिए मैंने उससे तीन साल पहले शादी की थी। फिर जब मैंने यह सार्वजनिक किया कि मैं शादीशुदा हूं, तो वह मुझ पर विश्वास नहीं करना चाहते थे। इसलिए मैंने रितेश को अपने साथ बिग बॉस के घर में आने के लिए मना लिया। मैं उनसे बहुत प्यार करता हूं और मैं उनसे हर चीज के लिए माफ कर दूंगी।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।